



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

एफपीओ सहकारी समितियों के लिए परियोजना प्रबंधन और निगरानी
केंद्रीय क्षेत्र योजना के तहत "10000 एफपीओ का गठन एवं संवर्धन"
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।



लक्ष्मणराव इनामदार राष्ट्रीय सहकारी अनुसंधान एवं विकास अकादमी
प्लॉट नंबर 89, सेक्टर-18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, गुरुग्राम, हरियाणा
द्वारा आयोजित



विषय

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं.
1.	परियोजना अवधारणा एवं चक्र	3
2.	परियोजना की व्यवहार्यता एवं निर्माण	8
3.	परियोजना मूल्यांकन तकनीक - तकनीकी विपणन और प्रबंधकीय मूल्यांकन	14
4.	परियोजना कार्यान्वयन एवं निगरानी	23
5.	सहकारी समितियों के विकास में एनसीडीसी की भूमिका एवं इसकी योजनाओं	29
6.	केंद्रीय क्षेत्रक योजना 10000 एफपीओ का गठन एवं संवर्धन	36
अनुबंध		
I.	एफपीओ द्वारा इक्विटी अनुदान प्राप्त करने के लिए आवेदन पत्र	47
II.	शेयरधारकों की सूची प्रारूप	50
III.	सभी शेयरधारकों के निदेशक मंडल का संकल्प और सहमति प्रपत्र	51
IV.	सीजीएफ कवर प्राप्त करने के लिए आवेदन प्रपत्र	55



अध्याय - 01: परियोजना अवधारणा एवं चक्र

परिचय

एक परियोजना अद्वितीय, परस्पर संबंधित गतिविधियों का एक समूह है जिसे एक विशिष्ट समय सीमा, बजट और ग्राहक के विनिर्देशों के भीतर एक अद्वितीय उत्पाद या सेवा बनाने के लिए एक निश्चित क्रम में नियोजित और निष्पादित किया जाता है। परियोजना बनने के लिए योग्य कार्यों की कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- विशिष्टता,
- लक्ष्य की विशिष्टता,
- गतिविधियों का क्रम,
- निर्दिष्ट समय और परस्पर संबंध।

परियोजनाओं को कई संसाधन बाधाओं के तहत शुरू की जाती हैं और उनकी सफलता प्रबंधक की इन बाधाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता पर निर्भर करती है। परियोजना प्रबंधन हितधारक की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करने या उससे अधिक परियोजना गतिविधियों के लिए ज्ञान, कौशल, उपकरण और तकनीकों का अनुप्रयोग है। प्रत्येक परियोजना में गतिविधियों का एक समूह होता है जो अद्वितीय होता है, जिसका अर्थ है कि यह पहली बार है कि कोई संगठन उस प्रकार की गतिविधि को संभालता है। ये गतिविधियाँ परियोजना में समान परिस्थितियों में दोहराई नहीं जाती हैं अर्थात्, प्रत्येक गतिविधि में कुछ अलग होगा या यदि गतिविधि दोहराई भी जाती है, तो इसे प्रभावित करने वाले चर हर बार बदलते हैं।

परियोजना प्रबंधन की अवधारणा

परियोजना प्रबंधन परियोजनाओं के प्रबंधन के लिए एक औपचारिक अनुशासन है। पिछले कुछ दशकों में परियोजना प्रबंधन विकसित किया गया है क्योंकि यह स्पष्ट हो गया है कि संरचित दृष्टिकोण के बिना, लोग परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने में बहुत अच्छे नहीं हैं। परियोजना प्रबंधन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि परियोजनाएं पूरी हो जाएं और अंतिम बिंदु (नया घर, कंप्यूटर सिस्टम या नया उत्पाद) हासिल हो जाए। इससे भी अधिक, परियोजना प्रबंधन उस अंतिम बिंदु तक पहुंचने के बारे में है, जिसका आमतौर पर एक निश्चित लागत और एक नियोजित समय के भीतर होता है। सफल परियोजना प्रबंधन संरचना, नियंत्रण, विस्तार पर पर्याप्त ध्यान और निरंतर परिचालन के बारे में है। परियोजना प्रबंधक की भूमिका इसकी संरचना को लागू करने के लिए पर्याप्त परियोजना प्रबंधन को समझना और यह सुनिश्चित करना है कि परियोजना को आवश्यक समय और लागत के भीतर सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। परियोजना प्रबंध के रूप में आपको जो चीजें करनी चाहिए वे हैं:

1. सुनिश्चित करें कि यह परियोजना क्यों की जा रही है, और यह क्या उत्पादन करेगी।
2. परियोजना की योजना बनाएं - यह समझने के लिए कि इसमें कितना समय लगेगा और इसकी लागत कितनी होगी।
3. परियोजना का प्रबंधन - यह सुनिश्चित करने के लिए कि जैसे-जैसे परियोजना आगे बढ़ती है, यह उन उद्देश्यों को प्राप्त करती है जिन्हें आपने निर्दिष्ट समय और लागत के भीतर परिभाषित किया है।



4. परियोजना को ठीक से पूरा करें - यह सुनिश्चित करने के लिए कि परियोजना द्वारा उत्पादित सब कुछ अपेक्षित गुणवत्ता का है और आवश्यकतानुसार काम करता है।

परियोजना प्रबंधन इसलिए उभरा है क्योंकि हमारे सदी के समाज की विशेषताएं प्रबंधन के नए तरीकों के विकास की मांग करती हैं। इसमें शामिल कई बलों में से तीन सर्वोपरि हैं:

1. मानव ज्ञान का घातीय विस्तार;
2. जटिल, परिष्कृत, अनुकूलित वस्तुओं और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला की बढ़ती मांग;
3. वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और उपभोग के लिए विश्वव्यापी प्रतिस्पर्धी बाजारों का विकास। सभी तीन ताकतें उन समस्याओं को हल करने के लिए शब्दों के उपयोग को अनिवार्य करने के लिए गठबंधन करती हैं जिन्हें व्यक्तियों द्वारा हल किया जा सकता है। इन तीनों बलों ने उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की जटिलता और उन्हें उत्पादित करने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया की जटिलता को बढ़ाने के लिए गठबंधन किया है और यह सब बदले में परिणामों और प्रक्रियाओं दोनों को नियंत्रित करने के लिए अधिक परिष्कृत प्रणालियों की आवश्यकता की ओर जाता है।

जैसे-जैसे परियोजना प्रबंधन की तकनीकों का विकास हुआ, परियोजना संगठन का उपयोग फैलने लगा। निजी निर्माण फर्मों ने पाया कि परियोजना संगठन छोटी परियोजनाओं, जैसे गोदाम या अपार्टमेंट परिसर के निर्माण में सहायक था। ऑटोमोटिव कंपनियों ने नए ऑटोमोबाइल मॉडल विकसित करने के लिए परियोजना संगठन का इस्तेमाल किया। जनरल इलेक्ट्रिक और ग्रेट एंड व्हिटनी दोनों ने एयरलाइनों के साथ-साथ वायु सेना के लिए नए जेट विमान इंजन विकसित करने के लिए परियोजना संगठन का उपयोग किया। परियोजना प्रबंधन का उपयोग जूते और जहाजों के नए मॉडल विकसित करने के लिए भी किया गया है। हाल ही में, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और विशेष रूप से उत्पादों के बजाय सेवाओं का उत्पादन करने वाले संगठनों द्वारा परियोजना प्रबंधन का उपयोग तेजी से बढ़ा है। विज्ञापन अभियान, वैश्विक विलय और पूंजी अधिग्रहण को अक्सर परियोजनाओं के रूप में संभाला जाता है, और विधियां गैर-लाभकारी क्षेत्र में फैल गई हैं। समारोह, शादी, फंड ड्राइव, चुनाव अभियान, पार्टियां, वादन आदि सभी परियोजना प्रबंधन के सिद्धांतों का उपयोग करते हैं। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के विकास के लिए परियोजना प्रबंधन तकनीकों को व्यापक रूप से अपनाना सबसे महत्वपूर्ण रहा है।

परियोजना जीवन चक्र

जैविक संस्थाओं की तरह, परियोजनाओं के भी जीवन चक्र होते हैं। धीमी शुरुआत से वे आकार के निर्माण के लिए प्रगति करते हैं, फिर चोटी, गिरावट शुरू करते हैं, और अंत में समाप्त होना चाहिए। कुछ परियोजनाएं मूल संगठन के सामान्य, चल रहे संचालन में चरणबद्ध होने के साथ समाप्त होती हैं।

घटक

परियोजनाएं अक्सर उनके मूल संगठन द्वारा एक साथ की जा रही अन्य परियोजनाओं के साथ परस्पर क्रिया करती हैं; लेकिन प्रोजेक्ट हमेशा मूल संगठन के मानक, चल रहे संचालन के साथ इंटरैक्ट करते हैं। हालांकि एक संगठन के कार्यात्मक विभाग (विपणन, वित्त, निर्माण, और इसी तरह) एक दूसरे के साथ नियमित, पैटर्न वाले तरीके से बातचीत करते हैं, परियोजनाओं और इन विभागों के बीच बातचीत के पैटर्न परिवर्तनशील होते हैं। मार्केटिंग किसी प्रोजेक्ट की शुरुआत और अंत में



शामिल हो सकती है, लेकिन बीच में नहीं। विनिर्माण में प्रमुख भागीदारी हो सकती है। वित्त अक्सर शुरुआत में और अंत में लेखांकन के साथ-साथ आवधिक रिपोर्टिंग समय पर भी शामिल होता है। परियोजना प्रबंधन को इन सभी बातचीत को स्पष्ट रखना चाहिए और सभी बाहरी समूहों के साथ उचित अंतर्संबंध बनाए रखना चाहिए।

विशिष्टता

हर योजना में कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो अद्वितीय होते हैं। कोई भी दो निर्माण या अनुसंधान एवं विकास परियोजनाएं बिल्कुल एक जैसी नहीं हैं। हालांकि यह स्पष्ट है कि निर्माण परियोजनाएं आमतौर पर आर एंड डी परियोजनाओं की तुलना में अधिक नियमित होती हैं, कुछ हद तक अनुकूलन परियोजनाओं की विशेषता है। जोखिम की उपस्थिति के अलावा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस विशेषता का अर्थ है कि परियोजनाएं, उनकी प्रकृति से, पूरी तरह से नियमित रूप से कम नहीं की जा सकती हैं। परियोजना प्रबंधन के महत्व पर बल दिया जाता है, क्योंकि अपवाद को छोड़कर प्रबंधन के सेवक के रूप में, परियोजना प्रबंधन पाएंगे कि प्रबंधन के लिए कई अपवाद प्राप्त होंगे।

उद्देश्य

एक परियोजना आमतौर पर वांछित अंतिम परिणामों के एक अच्छी तरह से परिभाषित सेट के साथ एक बार की गतिविधि होती है। इसे उप-कार्यों में विभाजित किया जा सकता है जिन्हें परियोजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरा किया जाना चाहिए। परियोजना इतनी जटिल है कि उप-कार्यों को समय, प्राथमिकता, लागत और प्रदर्शन के संदर्भ में सावधानीपूर्वक समन्वय और नियंत्रण की आवश्यकता होती है। अक्सर, परियोजना को उसी मूल संगठन द्वारा किए जा रहे अन्य परियोजनाओं के साथ समन्वयित किया जाना चाहिए।

टकराव

अधिकांश प्रबंधकों से अधिक, परियोजना प्रबंधन संघर्ष की विशेषता वाली दुनिया में रहते हैं। परियोजनाओं संसाधनों और कर्मियों के लिए कार्यात्मक विभागों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। अधिक गंभीर, परियोजनाओं के बढ़ते प्रसार के साथ, बहु-परियोजना संगठनों के भीतर संसाधनों के लिए परियोजना बनाम परियोजना संघर्ष है। परियोजना टीम के सदस्य परियोजना के संसाधनों के लिए और परियोजना की समस्याओं को हल करने में नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए लगभग निरंतर संघर्ष में हैं। यदि ऊपर सूचीबद्ध विशेषताएं एक परियोजना को परिभाषित करती हैं, तो यह पूछना उचित है कि क्या गैर-परियोजनाएं हैं। वहाँ हैं। मानक उत्पादों के प्रवाह का उत्पादन करने के लिए एक विनिर्माण लाइन का उपयोग एक गैर-परियोजना है। साप्ताहिक रोजगार रिपोर्ट तैयार करना, स्कूल लंच तैयार करना, डाक की डिलीवरी, डेल्टा की उड़ान, 1288 डलास से डलेस तक, आपके ई-मेल की जांच, सभी गैर-परियोजनाएं हैं। अब हम जानते हैं कि एक परियोजना एक विशिष्ट, परिमित कार्य है जिसे पूरा किया जाना है। क्या बड़े या छोटे पैमाने या लंबे या छोटे पैमाने पर विशेष रूप से प्रासंगिक नहीं है। प्रासंगिक बात यह है कि पूरी परियोजना को एक इकाई के रूप में लिया जाना चाहिए। हालाँकि, कुछ विशेषताएँ हैं जो परियोजनाओं की विशेषता हैं। प्रत्येक परियोजना अपने विकास के विभिन्न चरणों से गुजरती है। ये चरण परियोजना के प्रकार के आधार पर भिन्न होते हैं। उदाहरण के लिए, एक नई कार बनाने की परियोजना में एक नए प्रकार के वाशिंग डिटर्जेंट के लिए एक



विज्ञापन अभियान विकसित करने की परियोजना की तुलना में अलग-अलग चरण होते हैं। हालाँकि, सामान्य स्तर पर परियोजनाओं को सामान्य चरणों से गुजरना होगा जैसे:

1. विस्तार से निर्दिष्ट करना कि परियोजना किस लिए है।
2. परियोजना की योजना बनाना और यह निर्धारित करना कि यह कैसे किया जाएगा।
3. प्रोजेक्ट करना और योजना के अनुसार डिलिवरेबल्स बनाना।
4. यह जांचना कि डिलिवरेबल्स वही हैं जो आप मूल रूप से चाहते थे और जरूरतों को पूरा करते हैं।
5. परियोजना को बंद करना।

परिभाषित ये पांच चरण एक साधारण परियोजना जीवनचक्र हैं। जीवनचक्र एक कंकाल ढांचा है जिसे आप अपने प्रोजेक्ट के आसपास बना सकते हैं। धीमी शुरुआत से, वे आकार के निर्माण के लिए प्रगति करते हैं, फिर चोटी, उसके बाद गिरावट, और अंत में उन्हें समाप्त कर दिया जाता है। कुछ परियोजनाएं मूल संगठन के सामान्य, चल रहे संचालन में चरणबद्ध तरीके से समाप्त हो जाती हैं।

डिलिवरी और डिलिवरेबल्स

एक शब्द है कि परियोजना प्रबंधक और परियोजनाओं में नियमित रूप से शामिल लोग हर समय उपयोग करते हैं; यह डिलीवरी है। परियोजनाओं के संदर्भ में वितरण का सीधा सा मतलब है कि आप जो काम करने के लिए तैयार हैं, उसे पूरा करना। इसलिए परियोजना प्रबंधन की भूमिका प्रोजेक्ट को डिलीवर करना है। डिलीवरी शब्दजाल का एक उपयोगी टुकड़ा है क्योंकि यह बार-बार 'परियोजना को अपेक्षित समय और वांछित परिणाम के साथ लागत को पूरा करने' लिखने से बचाता है।

डिलिवरेबल्स वे हैं जो एक परियोजना द्वारा वितरित किए जाते हैं इसलिए ऊपर के उदाहरण लेते हुए; संबंधित परियोजनाओं से डिलिवरेबल्स एक नया घर, एक नया कंप्यूटर सिस्टम या एक नया उत्पाद है। एक प्रोजेक्ट में डिलिवरेबल्स को प्रोजेक्ट की शुरुआत में परिभाषित किया जाता है, और एक प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में आपकी सफलता उन्हें नियोजित समय में और अपेक्षित लागत तक पहुंचाने में होती है।

गतिविधियों की अतिव्यापी

परियोजनाएं अक्सर उनके मूल संगठन द्वारा एक साथ की जा रही अन्य परियोजनाओं के साथ परस्पर क्रिया करती हैं; लेकिन परियोजना हमेशा मूल संगठन के मानक, चल रहे संचालन के साथ इंटरैक्ट करते हैं। हालांकि एक संगठन के कार्यात्मक विभाग (विपणन, वित्त, निर्माण, और इसी तरह) एक दूसरे के साथ नियमित, पैटर्न वाले तरीके से बातचीत करते हैं, परियोजनाओं और इन विभागों के बीच बातचीत के पैटर्न परिवर्तनशील होते हैं। मार्केटिंग किसी प्रोजेक्ट की शुरुआत और अंत में शामिल हो सकती है, लेकिन बीच में नहीं। विनिर्माण में प्रमुख भागीदारी हो सकती है। वित्त अक्सर शुरुआत में और अंत में लेखांकन के साथ-साथ आवधिक रिपोर्टिंग समय पर भी शामिल होता है। प्रधान मंत्री को इन सभी अंतःक्रियाओं को स्पष्ट रखना चाहिए और सभी बाहरी समूहों के साथ उचित अंतर्संबंध बनाए रखना चाहिए।



संसाधनों का बंटवारा

अधिकांश प्रबंधकों से अधिक, परियोजना प्रबंधन संघर्ष की विशेषता वाली दुनिया में रहते हैं। परियोजनाओं संसाधनों और कर्मियों के लिए कार्यात्मक विभागों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। अधिक गंभीर, परियोजनाओं के बढ़ते प्रसार के साथ, बहु-परियोजना संगठनों के भीतर संसाधनों के लिए परियोजना बनाम परियोजना संघर्ष है। परियोजना टीम के सदस्य परियोजना के संसाधनों के लिए और परियोजना की समस्याओं को हल करने में नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए लगभग निरंतर संघर्ष में हैं। इस बारे में बहुत चर्चा है कि क्या एक परियोजना जीवन चक्र का केवल एक 'सच्चा' मॉडल है या कई, और क्या इनमें से कोई भी वास्तविक जीवन में क्या होता है, इसका यथोचित सटीक विवरण है। कुछ लेखकों में परियोजना जीवन चक्र के हिस्से के रूप में व्यवहार्यता अध्ययन शामिल है; दूसरों का मानना है कि उचित परियोजना तभी शुरू होती है जब व्यवहार्यता अध्ययन पूरा हो जाता है और प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाता है, या केवल जब लागत कोड और परियोजना के लिए बजट कंपनी लेखाकारों द्वारा परिभाषित किया जाता है। व्यवहार में, जीवन चक्र का विवरण बहुत सामान्य या बहुत विस्तृत हो सकता है: कुछ केवल सुझाव दे सकते हैं कि क्या करना है, जबकि अन्य यह बता सकते हैं कि क्या किया जाना चाहिए। अत्यधिक विस्तृत विवरण में कई रूप, मॉडल, चेकलिस्ट आदि शामिल हो सकते हैं जो परियोजना प्रबंधन पद्धति शब्द से जुड़े हुए हैं।

परियोजना जीवन चक्र के पांच चरण

पांच प्रमुख प्रक्रिया समूह पहल, योजना, क्रियान्वयन, निगरानी और नियंत्रण और समापन कर रहे हैं। अधिकांश प्रक्रियाएं जिनके बारे में हम सोच सकते हैं वे इन पांच बुनियादी प्रक्रियाओं के अंतर्गत आती हैं; उदाहरण के लिए, निर्माण उद्योग में, बजट बनाना, लागत लगाना और अनुमान लगाना योजना के अंतर्गत आता है।

शुरुआत

यह प्रक्रिया यह देखने में मदद करती है कि क्या हासिल किया जाना है। यह वह जगह है जहां परियोजना को प्रायोजक / ग्राहक द्वारा औपचारिक रूप से अनुमोदित किया जाता है, प्रारंभिक क्षेत्र परिभाषित किया जाता है, और हितधारकों की पहचान की जाती है। यह प्रक्रिया इसलिए की जाती है ताकि परियोजनाओं और कार्यक्रमों को न केवल एक प्रायोजक निकाय द्वारा अनुमोदित किया जाए, बल्कि यह भी कि परियोजनाओं को संगठन के रणनीतिक उद्देश्यों के साथ जोड़ा जाए। जहां यह नहीं किया जाता है, परियोजनाओं को शुरू किया जा सकता है और बिना किसी वास्तविक लक्ष्य या उद्देश्य के बेतरतीब ढंग से चलाया जा सकता है।

योजना

यह परियोजना प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। नियोजन प्रक्रिया परियोजना गतिविधि चक्र के केंद्र में है, और हितधारकों को मार्गदर्शन देती है कि परियोजना कहाँ और कैसे शुरू की जाए। नियोजन चरण वह है जहां परियोजना योजनाओं का दस्तावेजीकरण किया जाता है, परियोजना के



वितरण और आवश्यकताओं को परिभाषित किया जाता है, और परियोजना अनुसूची बनाई जाती है। इसमें परियोजना के कार्यान्वयन और समापन चरणों के माध्यम से आपकी टीम का मार्गदर्शन करने में मदद करने के लिए योजनाओं का एक सेट बनाना शामिल है। इस चरण के दौरान बनाई गई योजनाओं से परियोजना टीम को समय, लागत, गुणवत्ता, परिवर्तन, जोखिम और संबंधित मुद्दों का प्रबंधन करने में मदद मिलेगी।

निष्पादित

इस प्रक्रिया को कार्यान्वयन चरण के रूप में भी जाना जाता है, जिसमें परियोजना गतिविधि चक्र के पिछले चरण में तैयार की गई योजना को क्रियान्वित किया जाता है। परियोजना गतिविधि चक्र के निष्पादन चरण का उद्देश्य परियोजना के अपेक्षित परिणाम लाना है। आम तौर पर, यह परियोजना प्रबंधन जीवन चक्र का सबसे लंबा चरण है, जहां अधिकांश संसाधन लागू होते हैं। परियोजना निष्पादन के दौरान, निष्पादन टीम उन सभी अनुसूचियों, प्रक्रियाओं और टेम्पलेट्स का उपयोग करती है जो पूर्व चरणों के दौरान तैयार और प्रत्याशित थे। अप्रत्याशित घटनाओं और स्थितियों का अनिवार्य रूप से सामना किया जाएगा, और प्रोजेक्ट मैनेजर और प्रोजेक्ट टीम को उनके सामने आने पर उनसे निपटना होगा।

निगरानी और नियंत्रण

यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सभी कार्यों और मेट्रिक्स की देखरेख करती है कि सहमत और स्वीकृत परियोजना जो कि शुरू की गई है, समय पर और बजट के भीतर है ताकि परियोजना न्यूनतम जोखिम के साथ आगे बढ़े। इस प्रक्रिया में नियोजित प्रदर्शन के साथ वास्तविक प्रदर्शन की तुलना करना और महत्वपूर्ण अंतर मौजूद होने पर वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई करना शामिल है।

समापन

इसे परियोजना गतिविधि चक्र की अंतिम प्रक्रिया माना जाता है। इस चरण में, परियोजना को औपचारिक रूप से बंद कर दिया जाता है और फिर परियोजना प्रायोजक / ग्राहक को पूर्ण परियोजना की सफलता के समग्र स्तर पर एक रिपोर्ट तैयार की जाती है। समापन प्रक्रिया में प्रायोजक / ग्राहक को डिलिवरेबल्स सौंपना, मालिकों को दस्तावेज सौंपना, आपूर्तिकर्ता अनुबंधों को रद्द करना, कर्मचारियों और उपकरणों को जारी करना और परियोजना के बंद होने के हितधारकों को सूचित करना शामिल है।



अध्याय - 02: परियोजना की व्यवहार्यता तथा सूत्रीकरण

परियोजना की व्यवहार्यता तथा सूत्रीकरण

परियोजना निर्माण: नई परियोजना की स्थापना करते समय उद्यमियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएं औपचारिकताओं और प्रक्रियाओं को पूरा करने, तकनीकी आवश्यकताओं या यहां तक कि वित्तीय बाधाओं के संबंध में भी हो सकती हैं। इसलिए, निवेश पर प्रतिबद्धता करने से पहले परियोजना के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं की जांच करना और प्रस्तावित परियोजना के तहत किए जाने वाले कार्य की सीमा निर्धारित करना आवश्यक है। परियोजना के जीवन चक्र में पहला चरण परियोजना निर्माण है जो मूल रूप से परियोजना के विचार पर ध्यान से और गंभीर रूप से पहली बार देख रहा है। यह व्यय को नियंत्रित करने में सक्षम बनाता है और यदि किसी भी कदम पर कुछ भी गलत होने के संकेत हैं या यदि जांच के किसी भी चरण में परियोजना में कमजोरी देखी जाती है, तो परियोजना को बंद भी किया जा सकता है। परियोजना निर्माण एक निवेश निर्णय पर पहुंचने के अंतिम उद्देश्य के लिए एक परियोजना विचार का व्यवस्थित विकास है। इसमें संसाधन उपयोग के जल्द से जल्द संभावित चरण में खतरे की घंटी बजाने का अंतर्निहित तंत्र है। आजकल पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अनिवार्य रूप से विश्लेषण करने की आवश्यकता है जिसमें पर्यावरण प्रभाव विश्लेषण भी शामिल है।

निम्नलिखित कुछ समस्याएं हैं जो उद्यमों को बहुत अधिक उत्पीड़न, कुंठा और निराशा की ओर ले जाती हैं। लेकिन सही समय पर सही तरीके से किया गया एक परियोजना निर्माण अभ्यास इन समस्याओं की कठोरता और परिमाण को कम करता है।

I. **उपयुक्त प्रौद्योगिकी का चयन:** परियोजना के लिए आवश्यक रूप से प्रौद्योगिकी को अपनाना आवश्यक है। परियोजना के लिए उपयुक्त तकनीक के चयन में उद्यमी को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। समस्या नई तकनीक के विकास या उपलब्ध प्रौद्योगिकियों में से उपयुक्त और पर्याप्त प्रौद्योगिकी के चयन के संबंध में हो सकती है। अत्यधिक औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं में, आधुनिक तकनीकों का विकास किया गया है। लेकिन ये छोटी और मध्यम परियोजनाओं या विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के मामले में उपयुक्त नहीं हो सकते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि अच्छी तकनीक उपलब्ध हो लेकिन संसाधन पर्याप्त न हों। एक अन्य समस्या कुशल जनशक्ति की आवश्यकता हो सकती है। यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि इन कारकों के संबंध में परियोजना की पूरी तरह से जांच की जानी चाहिए। परियोजना निर्माण के बिना यह संभव नहीं है।

II. **बाहरी अर्थव्यवस्थाओं का प्रभाव:** कोई भी परियोजना अलगाव में कार्य नहीं कर सकती है और इसके लिए बाहरी अर्थव्यवस्थाओं के समर्थन की आवश्यकता होती है। अन्य परियोजनाओं या उद्योग पर विचाराधीन परियोजना की निर्भरता निम्न के संबंध में हो सकती है:

क) कच्चे माल की आपूर्ति

ख) बिजली और इसकी आपूर्ति की आवश्यकताएं

ग) उपकरण, स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति

घ) तकनीकी, वित्तीय या प्रबंधकीय सेवाओं की आपूर्ति के लिए सहायक उद्यम



ड) संचार और परिवहन सुविधाओं का जटिल नेटवर्क

प्रत्यक्ष लागत परियोजना की मूल लागत है। लेकिन, विकासशील देशों के मामले में उपर्युक्त सहायक लागतों पर भी विचार किया जाता है। विकसित देशों या उन्नत औद्योगिक वातावरण में, इस मूल लागत की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि इसका बाहरी अर्थव्यवस्थाओं के संदर्भ में योगदान होता है।

तकनीकी जनशक्ति की उपलब्धता: सफल निष्पादन के लिए उपयुक्त और तकनीकी रूप से योग्य कर्मियों की उपलब्धता की आवश्यकता होती है। परियोजना निर्माण परियोजना के इस पहलू का विधिवत विश्लेषण करता है ताकि तकनीकी रूप से अव्यवहार्य परियोजना को प्रारंभिक चरण में ही छोड़ दिया जा सके।

संसाधन जुटाना: संसाधन जुटाना वांछित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न संसाधनों को इकट्ठा करने की क्षमता को संदर्भित करता है। परियोजना के प्रारंभिक स्तर पर जुटाना बहुत आसान और व्यवहार्य हो सकता है। लेकिन पूरे प्रोजेक्ट में इसकी लगातार जरूरत होती है। परियोजना निर्माण में इस पहलू को भी ध्यान में रखा गया है।

कानूनी परिदृश्य: सरकार की नीतियों का अनिवार्य रूप से पालन करने की आवश्यकता है।

अधिकांश देशों में सामना की जाने वाली मूल समस्या समेकित और विस्तृत जानकारी की अनुपलब्धता है। भारत में "औद्योगिक विकास विभाग" ने "उद्योगों के लिए दिशानिर्देश" के नाम से एक संग्रह जारी किया है। इस संग्रह में निम्नलिखित पहलुओं को शामिल किया गया है:

क) औद्योगिक नीति

ख) लाइसेंसिंग नीति और प्रक्रियाएं, यदि कोई हों

ग) विदेशी सहयोग के लिए दिशानिर्देश

ड) आयात और निर्यात नियंत्रण आदेश

च) क्षमताओं की वर्तमान स्थिति

छ) आगे विकास की संभावना

परियोजना निर्माण का महत्व: बड़ी परियोजनाओं को वित्तीय संस्थानों से सहायता की आवश्यकता होती है। अच्छी तरह से तैयार की गई परियोजनाओं के मामले में फंडिंग परेशानी मुक्त हो जाती है। किसी परियोजना के विचार को वित्तीय एजेंसी को बेचने का सबसे व्यवहार्य तरीका है कि सापेक्ष महत्व और व्यवहार्यता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न परियोजनाओं के लिए संसाधनों की कमी के आवंटन की आवश्यकता होती है। इसे परियोजना निर्माण के माध्यम से प्रभावी तरीके से संभव बनाया जा सकता है। उचित परियोजना निर्माण के बाद तैयार की गई परियोजना रिपोर्ट, बहुत मददगार होगी।

परियोजना निर्माण के चरण: परियोजना निर्माण अपने आप में एक विश्लेषणात्मक प्रबंधन सहायता है। यह उद्यमी को सबसे प्रभावी परियोजना निर्णय पर पहुंचने में सक्षम बनाता है। परियोजना निर्माण अभ्यास में आम तौर पर इस तरह के पहलू शामिल होते हैं:

1. व्यवहार्यता विश्लेषण
2. तकनीकी-आर्थिक विश्लेषण
3. परियोजना डिजाइन और नेटवर्क विश्लेषण



4. इनपुट विश्लेषण
5. वित्तीय विश्लेषण
6. सामाजिक लागत लाभ विश्लेषण
7. पूर्व-निवेश मूल्यांकन
8. पर्यावरण प्रभाव विश्लेषण (ईआईए)

व्यवहार्यता विश्लेषण: व्यवहार्यता विश्लेषण यह निर्धारित करने के लिए की जाने वाली एक प्रक्रिया है कि परियोजना का विचार आगे बढ़ने लायक है या नहीं। यह निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए आयोजित किया जाता है:

I. क्या कंपनी के पास आवश्यक संसाधन और तकनीक है?

II. क्या कंपनी को अपने निवेश पर पर्याप्त उच्च प्रतिफल प्राप्त होगा?

I. जब किसी परियोजना को विकास के लिए लिया जाता है, तो परियोजना कार्यान्वयन निकाय के सामने तीन विकल्प होंगे।

क. सबसे पहले, यदि प्रस्तावित परियोजना यह विचार देती है कि परियोजना सकारात्मक है, तो परियोजना मूल्यांकन निकाय पूर्व-निवेश अध्ययन और डिजाइन विकास में और संसाधनों का निवेश करने के लिए आगे बढ़ेगा।

ख. दूसरे, यदि प्रस्तावित परियोजना यह विचार देती है कि परियोजना को हाथ में लेना संभव नहीं है, तो परियोजना का मूल्यांकन करने वाला निकाय परियोजना में और निवेश की संभावना को खारिज कर देगा।

ग. तीसरा, जो भी जानकारी और आंकड़े उपलब्ध हैं, वे प्रस्तावित परियोजना की व्यवहार्यता पर निर्णय लेने के लिए पर्याप्त नहीं हैं; मूल्यांकन निकाय निवेश के निर्णय को उस समय तक के लिए टाल देगा जब तक कि वे सभी आवश्यक जानकारी और डेटा एकत्र करने के बाद परियोजना के बारे में अंतिम निर्णय ले सकें।

II. आम तौर पर, व्यवहार्यता विश्लेषण में तीन चरण होते हैं अर्थात्।

क) पूर्व-व्यवहार्यता अध्ययन: सर्वोत्तम व्यावसायिक परिदृश्यों का निर्धारण, विश्लेषण और चयन करने के लिए प्रारंभिक अध्ययन। इस अध्ययन में, हम मानते हैं कि हमारे पास एक से अधिक व्यावसायिक परिदृश्य हैं, और फिर हम जानना चाहते हैं कि तकनीकी और आर्थिक रूप से कौन सा सबसे अच्छा है।

बी) व्यवहार्यता अध्ययन: यह विशेष रूप से एक विश्लेषण है जो एक परियोजना के सभी प्रासंगिक कारकों को ध्यान में रखता है - जिसमें आर्थिक, तकनीकी, कानूनी और शेड्यूलिंग विचार शामिल हैं। लक्ष्य निर्धारित समय सीमा के भीतर परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा करने की संभावना का पता लगाना है।

• व्यवहार्यता अध्ययन के प्रकार:

❖ तकनीकी व्यवहार्यता

- तकनीकी: हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर
- मौजूदा या नई तकनीक



- जनशक्ति
- साइट विश्लेषण
- परिवहन

❖ **वित्तीय व्यवहार्यता**

- प्रारंभिक निवेश
- पूंजी प्राप्त करने के लिए संसाधन: बैंक, निवेशक, उद्यम पूंजीपति
- निवेश पर प्रतिफल

❖ **बाजार व्यवहार्यता**

- उद्योग का प्रकार
- प्रचलित बाजार
- भविष्य के बाजार में वृद्धि
- प्रतिस्पर्धी और संभावित ग्राहक
- बिक्री का प्रक्षेपण

❖ **संगठनात्मक व्यवहार्यता**

- व्यवसाय की संगठनात्मक संरचना
- व्यवसाय या विशिष्ट परियोजना की कानूनी संरचना
- प्रबंधन टीम की योग्यता, पेशेवर कौशल और अनुभव

ग) परियोजना रिपोर्ट: एक परियोजना रिपोर्ट एक विस्तृत कार्य योजना और एक परियोजना के बारे में विवरण है। इस रिपोर्ट को तैयार करने का प्राथमिक लक्ष्य एक ऐसी रणनीति तैयार करना है जो परियोजना को उचित तरीके से पूरा करने के लिए आवश्यक है। रणनीति में एक परियोजना के विभिन्न पहलू शामिल हो सकते हैं, जैसे तकनीकी व्यवहार्यता, वित्तीय पहलू, विपणन लक्ष्य आदि।

तकनीकी-आर्थिक विश्लेषण: यह विश्लेषण उद्यमी को परियोजना के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित पहलुओं का अध्ययन करने में सक्षम बनाता है: -

क. परियोजना की पहचान

ख. मांग क्षमता

ग. इष्टतम प्रौद्योगिकी का चयन

तकनीकी-आर्थिक विश्लेषण में दो भाग होते हैं। पहला भाग अधिकतम व्यवहार्य परियोजना उत्पादन निर्धारित करना है। दूसरा भाग आउटपुट प्राप्त करने के लिए इष्टतम रणनीति का चयन करना है। तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता अध्ययन में निम्नलिखित पहलुओं को शामिल किया गया है:

- ❖ बाजार और अनुमानित भावी बिक्री राजस्व
- ❖ कच्चा माल, बिजली और रसद
- ❖ संयंत्र स्थल, स्थान और अवसंरचना
- ❖ परियोजना तकनीकी विनिर्देश



- ❖ इनबाउंड और आउटबाउंड लॉजिस्टिक्स और लॉजिस्टिक्स प्लानिंग।
- ❖ परियोजना का पर्यावरण और सामाजिक प्रभाव।
- ❖ कार्यान्वयन योजना।
- ❖ मानव संसाधन।
- ❖ निवेश और परिचालन लागत।
- ❖ वित्तीय मूल्यांकन: इसमें परियोजना की लाभप्रदता, आईआरआर, एनपीवी, पेबैक आदि शामिल हैं।
- ❖ जोखिम और शमन।

प्रोजेक्ट डिज़ाइन और नेटवर्क विश्लेषण: किसी प्रोजेक्ट का पहला और सबसे महत्वपूर्ण पहलू प्रोजेक्ट डिज़ाइन है। यह वास्तव में परियोजना इकाई का महत्वपूर्ण अंग है। यह उन व्यक्तिगत गतिविधियों को परिभाषित करता है जो परियोजना के कोष और एक दूसरे के साथ उनके अंतर्संबंध में जाती हैं। यह उन गतिविधियों की पहचान करता है जिन्हें शुरू किया जा सकता है और उन गतिविधियों को भी जिन्हें एक साथ किया जा सकता है। परियोजना डिज़ाइन घटना के प्रवाह की पहचान करने में सक्षम बनाता है जो परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए होना चाहिए। पीईआरटी और सीपीएम जैसी नेटवर्क तकनीकें किसी संगठन के प्रबंधन को इन कार्यों को कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से करने में मदद करती हैं।

आंतरिक विश्लेषण: आंतरिक विश्लेषण का उद्देश्य परियोजना इनपुट की पहचान, परिमाण और मूल्यांकन करना है जिसमें कच्चे माल, मानव संसाधन और प्रौद्योगिकी शामिल हैं। संक्षेप में, यह विश्लेषण एक परियोजना के लिए संसाधनों की आवश्यकता का अनुमान लगाता है। इस विश्लेषण को पहले इनपुट की प्रकृति की पहचान करने, उपलब्ध इनपुट की मात्रा निर्धारित करने और इनपुट की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य की पूर्ति करनी चाहिए। यह आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता के दृष्टिकोण से परियोजना की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करता है। यह परियोजना लागत का आकलन करने में सहायता करता है। इनपुट विश्लेषण वित्तीय विश्लेषण और लागत-लाभ विश्लेषण का आधार है।

वित्तीय विश्लेषण: परियोजना की वित्तीय लागतों और इसके द्वारा उत्पन्न राजस्व के बारे में अनुमान ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि परियोजना को शुरू करना लाभदायक होगा या नहीं, इसे वित्तीय विश्लेषण कहा जाता है। यह विश्लेषण वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए किसी परियोजना में किए जाने वाले निवेश की सीमा के बारे में एक स्पष्ट तस्वीर देता है। इस अध्ययन को एक अन्य नाम यानि वित्तीय पूर्वानुमान से भी पुकारा जाता है। इस विश्लेषण को करने से, परियोजना की परियोजना लागत, परियोजना के राजस्व और पूंजीगत व्यय और अंत में परियोजना से उत्पन्न होने वाले राजस्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

परियोजना की वित्तीय व्यवहार्यता की जांच में वित्तीय संस्थानों द्वारा निम्नलिखित मानदंड अपनाए जाते हैं:

क. परियोजना के लागत अनुमानों की जांच की जानी है कि क्या ऐसी लागतें वास्तविक हैं और वृद्धि को ध्यान में रखा गया है।

ख. समय और लागत से अधिक रनों पर विचार किया जाना चाहिए।



ग. वित्त के स्रोत अर्थात् ऋण-इक्विटी अनुपात, अचल संपत्तियों का वित्तपोषण, कार्यशील पूंजी का वित्तपोषण, शेयर पूंजी के लिए प्रमोटरों का योगदान, आदि ऋण इक्विटी अनुपात 2:1 बनाए रखा जाना चाहिए।

घ. वित्तीय व्यवहार्यता यानी लाभप्रदता, संवेदनशीलता विश्लेषण, नकदी प्रवाह की पूरी तरह से जांच की जानी चाहिए।

ड. ब्रेक-ईवन विश्लेषण और आईआरआर पर काम किया जाना चाहिए।

च. ब्याज कवरेज अनुपात की गणना की जानी चाहिए।

छ. जिस स्तर पर परियोजना के टूटने की संभावना है, उसकी भी जांच की जाती है।

ज. ऋण चुकौती अनुसूची वित्तीय अनुमानों के अनुसार तैयार की जाती है। चुकौती आंतरिक संसाधनों से की जानी चाहिए।

झ. मौजूदा कंपनी के मामले में, उत्पादन के स्तर, शुद्ध कमाई, उधार, लागत आदि पर नई परियोजना के प्रभाव को देखा जाना है।

य. प्रमोटरों से असुरक्षित ऋण की अनुमति केवल प्रतिबंधित परिस्थितियों में दी जाती है और इस शर्त के साथ कि वे वित्तीय संस्थानों की अनुमति के बिना राशि नहीं निकालेंगे।

सामाजिक लागत-लाभ अनुपात: सामाजिक लागत-लाभ विश्लेषण (एससीबीए) की अवधारणा फ्रांसीसी अर्थशास्त्री जूल्स डुपिट द्वारा पेश की गई है। सामाजिक लागत लाभ विश्लेषण पूंजी परियोजनाओं के मूल्यांकन में दीर्घकालिक निर्णय लेने के लिए एक व्यवस्थित मूल्यांकन तकनीक है। सामाजिक लागत-लाभ विश्लेषण एक शहरी विकास परियोजना के कारण होने वाले सभी प्रभावों का सर्वेक्षण करने के लिए एक व्यवस्थित और एकजुट आर्थिक उपकरण है। इसमें न केवल वित्तीय प्रभाव (निवेश लागत, कर और शुल्क जैसे प्रत्यक्ष लाभ, वगैरह) शामिल हैं, बल्कि सभी सामाजिक प्रभाव, जैसे: प्रदूषण, सुरक्षा, अप्रत्यक्ष (श्रम) बाजार, कानूनी पहलू, वगैरह। एक सामाजिक लागत-लाभ विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य उपर्युक्त विषम प्रभावों को समान रूप से तौलने के लिए अधिक से अधिक प्रभावों के लिए एक मूल्य संलग्न करना है। नतीजतन, ये कीमतें उस मूल्य को दर्शाती हैं जो एक समाज कारण प्रभावों से जोड़ता है, निर्णय निर्माता को एक परियोजना के शुद्ध सामाजिक कल्याण प्रभावों के बारे में एक बयान बनाने में सक्षम बनाता है।

इसलिए, एससीबीए तकनीकी और अन्य व्यवहार्यता अध्ययनों पर उचित जोर देने के साथ-साथ सामाजिक प्रभाव पर अधिक ध्यान देने के साथ सामाजिक लागत और संबंधित सामाजिक लाभों के बीच एक व्यवस्थित तुलना करने में सक्षम बनाता है। नियोजित अर्थव्यवस्थाओं के संदर्भ में, सामाजिक लागत लाभ विश्लेषण योजना ढांचे के भीतर व्यक्तिगत परियोजनाओं के मूल्यांकन में सहायता करता है। परियोजना की तकनीकी, वाणिज्यिक और वित्तीय व्यवहार्यता के अलावा, यह सामाजिक रूप से वांछनीय भी होना चाहिए।

किसी परियोजना की सामाजिक वांछनीयता के संकेतक निम्नलिखित हैं:

- रोजगार की संभावना
- प्रति कर्मचारी मूल्य वर्धित
- पूंजी के प्रति रुपया मूल्य वर्धित
- पूंजी उत्पादन अनुपात



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

- लागत लाभ अनुपात
- सामाजिक लागत लाभ विश्लेषण (एससीबीए)
- क्षेत्र का विकास
- देश को विदेशी मुद्रा लाभ।

इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि, कोई निश्चित सिद्धांत नहीं हो सकता है जिसे वाणिज्यिक रूप से परिवर्तित करने के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू किया जा सके



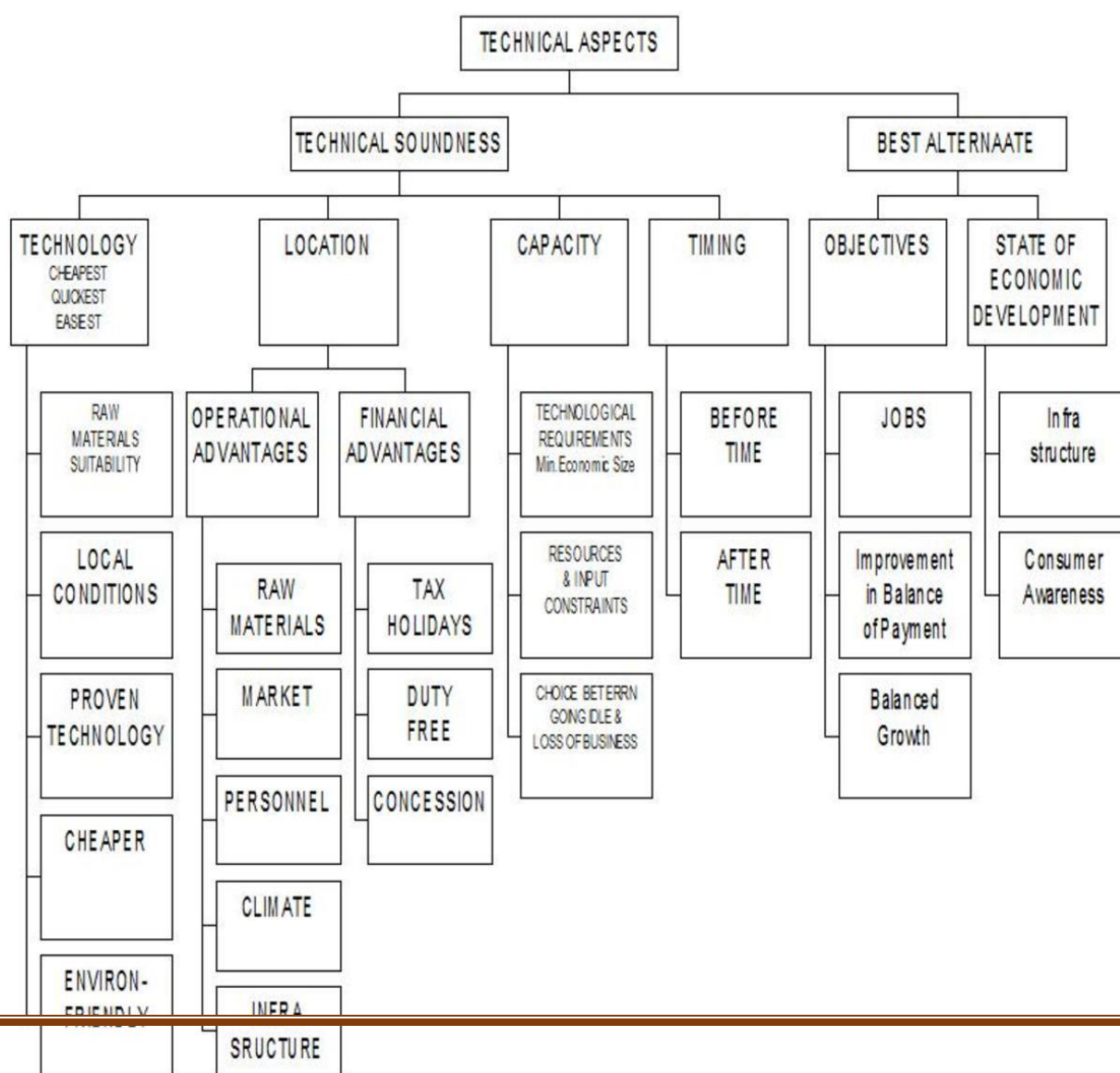
अध्याय - 03: परियोजना मूल्यांकन तकनीक - तकनीकी विपणन और

प्रबंधकीय मूल्यांकन

परिचय

परियोजना मूल्यांकन किसी परियोजना या प्रस्ताव की व्यवहार्यता का आकलन करने की संरचित प्रक्रिया है। इसमें संसाधन देने से पहले परियोजना की व्यवहार्यता की गणना करना शामिल है। यह एक उपकरण है जिसका उपयोग कंपनी सबसे अच्छी परियोजना चुनने के लिए करती है जो उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करेगी। परियोजना मूल्यांकन में अक्सर विभिन्न विकल्पों के बीच तुलना करना शामिल होता है और यह किसी निर्णय तकनीक या आर्थिक मूल्यांकन तकनीक का उपयोग करके किया जाता है।

किसी परियोजना का मूल्यांकन करने का अर्थ है प्रस्तावित समाधान का मूल्यांकन उसकी पहचान की गई समस्या या आवश्यकता को हल करने की क्षमता के विरुद्ध करना। परियोजना मूल्यांकन प्रबंधन किसी भी परियोजना का एक अनिवार्य चरण है, चाहे उसकी प्रकृति, प्रकार और आकार कुछ भी हो। यह चरण पूर्व-नियोजन या दीक्षा चरण के पहले बिंदु का प्रतिनिधित्व करता है। किसी परियोजना का मूल्यांकन किए बिना, आगे की योजना और विकास के साथ आगे बढ़ना वित्तीय और तकनीकी रूप से





अनुचित है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप एक नई कार (जैसे मेरे पड़ोसी की परियोजना) खरीदने जा रहे हैं, एक इमारत का निर्माण कर रहे हैं, एक व्यावसायिक प्रक्रिया में सुधार कर रहे हैं, एक नेटवर्क सिस्टम को अपडेट कर रहे हैं, एक मार्केटिंग अभियान चला रहे हैं, एक गैरेज का निर्माण कर रहे हैं, या कोई अन्य पहल कर रहे हैं, आप यह सुनिश्चित कर सकें के लिए कि आप अपने पर्यावरण में अपेक्षित एवं आवश्यक परिवर्तन करेंगे, आपके द्वारा प्राथमिक रूप से निर्धारण एवं मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

तकनीकी मूल्यांकन:

तकनीकी मूल्यांकन तकनीकी समीक्षा है जो कि परियोजना करती है जैसे प्रौद्योगिकी, संयंत्र जैसे विभिन्न मापदंडों मजबूत है। क्षमता, कच्चे माल की उपलब्धता, स्थान, जनशक्ति की उपलब्धता, आदि में तकनीकी विश्लेषण तकनीकी और इंजीनियरिंग पहलुओं का मूल्यांकन करने के लिए परियोजना के अध्ययन का प्रतिनिधित्व करता है जब एक परियोजना की जांच और निर्माण किया जा रहा है। यह परियोजना मूल्यांकन प्रणाली में एक सतत प्रक्रिया है जो परियोजना को सार्थक रूप से चालू करने के लिए पूर्वापेक्षाएँ निर्धारित करती है।

(क) कच्चे माल की उपयुक्तता

वांछित उत्पादों के निर्माण के लिए, कई कच्चे माल का उपयोग किया जा सकता है जो समान रूप से अच्छे परिणाम लाते हैं। अतः इस बात का अध्ययन किया जाना चाहिए कि क्षेत्र में कौन सा कच्चा माल आर्थिक रूप से उपलब्ध है और उसी के अनुसार मशीनरी का चयन किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए:

- गन्ने, चुकंदर और शकरकंद से क्रिस्टल चीनी बनाई जा सकती है। इसी तरह, चावल, मक्का या फलों से तरल चीनी निकाली जा सकती है।
- सोडा ऐश समुद्री नमक या साधारण नमक को परिवर्तित करके बनाया जा सकता है।
- कागज और बोर्ड का निर्माण लकड़ी, खोई, चावल की भूसी, गेहूं के भूसे और कपास की छड़ी का उपयोग करके किया जा सकता है
- चूना पत्थर की गुणवत्ता निर्धारित करती है कि सीमेंट प्रक्रिया गीली होनी चाहिए या सूखी।
- उर्वरक बनाने के लिए हवा, गैस, पानी, कोयला, कोक, लकड़ी और जिप्सम जैसे कई विकल्प उपलब्ध हैं।
- खाद्य तेल ताड़, सोया, कपास और सूरजमुखी और चावल की भूसी जैसे विभिन्न स्रोतों से निकाला जाता है।

(ख) स्थानीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त

- उपयुक्त तकनीक का चयन करते समय, स्थानीय परिस्थितियों जैसे गर्मी, धूल, बारिश या ठंड में रखा जाना चाहिए।



- इससे संबंधित अन्य कारकों पर भी विचार किया जाना चाहिए जैसे बिजली की रुकावट और कम साक्षरता और कौशल। कम साक्षरता की स्थिति में सेमी-ऑटोमैटिक प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए।

(ग) सिद्ध प्रौद्योगिकी

- प्रक्रिया को अच्छी तरह से आजमाया जाना चाहिए। यदि यह एक नई प्रक्रिया है, तो मशीनरी आपूर्तिकर्ता से एक प्रदर्शन बांड प्राप्त किया जाना चाहिए, जिसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति के बैंक से गारंटी द्वारा समर्थित होना चाहिए।
- पाकिस्तान में, सीमलेस पाइप के निर्माण के लिए एक संयंत्र विफल हो गया क्योंकि यह हॉट-रोल्ड प्रक्रिया पर आधारित था, जिसे साठ के दशक के अंत में दुनिया में अपनी तरह का पहला कहा जाता था।
- इसी तरह, एक खाद्य तेल परियोजना चावल की भूसी पर आधारित थी। हालांकि, चोकर को 24 घंटे के भीतर मिलों में लाया जाना चाहिए अन्यथा निकाला गया तेल मुक्त फैटी एसिड की उपस्थिति के लिए मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त होगा।

(घ) अन्य

- इसके अलावा, आयाम में किसी भी बदलाव के लिए या अन्य किस्मों में स्विच करने के लिए पौधे में लचीलापन होना चाहिए।
- विविधीकरण सुनिश्चित करने के लिए संयंत्र में कुछ अतिरिक्त सुविधाएं होनी चाहिए।• इसके अलावा, निश्चित पूंजीगत व्यय को कम रखने के लिए इसे सस्ते स्रोतों से खरीदा जाना चाहिए।





चीनी मिलें प्रति दिन 8,000 गन्ने की पेराई करने में सक्षम हैं, जिनमें से चीनी सबसे अच्छी 11% है।

स्थान

परिचालन लाभ, वित्तीय लाभ और सरकारी नीतियों को ध्यान में रखते हुए स्थान का चयन किया जाना चाहिए। इस पर इस प्रकार चर्चा की गई है:

(1) कच्चे माल की निकटता

- लकड़ी प्रसंस्करण वुड्स
- सीमेंट संयंत्र जिसमें शेल और जिप्सम की आवश्यकता होती है
- चीनी मिलें फसल क्षेत्र में होंगी
- तेल शोधनशालाएं बंदरगाह या तेल क्षेत्रों में स्थित हों

(2) बाजार से निकटता

- ऑटो-पार्ट्स (मोटर असेंबली प्लांट)
- सेवाएं (होटल, बैंक, प्रशिक्षण संस्थान)

(3) कर्मियों की उपलब्धता

- सॉफ्ट वेयर डेवलपर्स को ऐसे क्षेत्र में होना चाहिए जहां बहुत सारे कंप्यूटर विश्वविद्यालय हों।
- उन क्षेत्रों में इंजीनियरिंग सामान जहां कुशल श्रमिक केंद्रित हैं (लाहौर और गुजरांवाला)
- उन क्षेत्रों में जूट और कपड़ा मिलों जैसी श्रम प्रधान परियोजनाएं जहां सस्ता श्रम उपलब्ध है।

(4) इन्फ्रा-स्ट्रक्चर

- पानी और अपशिष्ट निपटान की उपयुक्तता-कपड़ा छपाई/कागज संयंत्र/चर्मशोधनशालाएं
- सामाजिक सुविधाएं

(5) अनुकूल जलवायु परिस्थितियाँ:

- पर्यटक परिसर / स्वास्थ्य रिसॉर्ट
- मिनरल वाटर के लिए पारिस्थितिक आवश्यकताएँ।

(ख) वित्तीय लाभ

- सरकार द्वारा प्रस्तावित कर, सब्सिडी, अनुदान और भत्ते
- सेंट्रल बैंक सहायता के माध्यम से बैंकों द्वारा सस्ते ऋण की उपलब्धता।
- उपयोग की कम दरें

(ग) सार्वजनिक नीतियां

- स्थान नीति - नकारात्मक क्षेत्र - जहां कोई उद्योग स्थापित नहीं किया जा सकता
- गैर-आकर्षक क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहन
- सार्वजनिक क्षेत्र की परियोजनाओं जैसे स्टील मिलों, पेट्रोरसायन से फीडर या डाउन-स्ट्रीम परियोजनाओं की स्थापना।
- बुनियादी ढांचे का विकास.
- क्षमता



- क्षमता का चुनाव वर्तमान और भविष्य की मांग को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। यह (i) क्षमता के अधिक होने पर बेकार हो जाने और (ii) क्षमता कम होने पर व्यवसाय की हानि के बीच एक विकल्प बन जाता है। इसके अलावा, तकनीकी आवश्यकताओं और संसाधनों की कमी को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

(क) तकनीकी आवश्यकताएं (न्यूनतम आर्थिक आकार)

- चीनी संयंत्र - 6,000 टन/दिन
- स्पिनिंग यूनिट - 25,000 स्पिंडल/दिन
- सीमेंट मिलें - 7,000 टन/दिन विशेष रूप से जब रोटरी भट्ठा संचालित किया जाना है।

(ख) संसाधन एवं इनपुट बाधाएं

- बिजली की आपूर्ति सीमित हो सकती है
- बुनियादी कच्चा माल सीमा के भीतर उपलब्ध नहीं है
- सीमित विदेशी मुद्रा
- प्लास्टिक की खरीदारी - उधार के समय में रहना

(ग) समय

- समय बहुत महत्वपूर्ण है। समय से पहले परिचालन में आने वाले प्रोजेक्ट को कोई बाजार नहीं मिलता। जबकि समय के बाद आने वालों के पास एक अप्रचलित उत्पाद है जिसे कोई भी शरीर कम कीमत पर भी नहीं खरीदेगा।

(घ) समय से पूर्व

- पॉलीइथाइलीन शॉपिंग बैग के उत्पादन की एक परियोजना तब शुरू हुई जब घर में बने बेकार-कागज के बैग प्लास्टिक बैग की कीमत के 10% पर उपलब्ध थे। इसलिए प्लास्टिक की थैलियों की कीमत खत्म हो गई और एक साल के असफल संचालन के बाद संयंत्र को बंद करना पड़ा।
- यदि ऐसा संयंत्र अभी स्थापित किया जाता है, तो इसे फिर से विपणन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि दुनिया भर में प्लास्टिक शॉपिंग बैग को हतोत्साहित किया जा रहा है।

(ख) समय के उपरांत

एक अन्य परियोजना ने उस समय मैनुअल टाइपराइटर का निर्माण शुरू किया जब उत्पाद पहले से ही बेमानी हो गया था।

एक तकनीकी मूल्यांकन समीक्षा मूल्यांकन की उपयुक्तता पर एक विचार है जो विचार संपत्ति की शर्तों पर बाजार मूल्य प्रदान करती है। तकनीकी समीक्षा के यांत्रिकी कार्य के दायरे या प्रकृति, ग्राहक, नीति आवश्यकताओं, या मूल्यांकित संपत्ति की प्रकृति के आधार पर अलग-अलग होंगे।



ASPECTS OF PROJECT APPRAISAL



विपणन मूल्यांकन:

- यह बाजार में किसी भी उत्पाद को पेश करने के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। ऐसे में मार्केट में लॉन्च करने से पहले इस बात पर जरूर गौर करें कि :-
- प्रस्तावित उत्पाद या सेवित की कुल मांग क्या होगी?
- मूल्यांकन के तहत परियोजना का बाजार हिस्सा क्या होगा
- अतीत और भविष्य की मांग के रुझान

➤ अतीत और वर्तमान आपूर्ति की स्थिति

- उत्पादन संभावनाएं और बाधाएं
- आयात और निर्यात
- प्रतियोगिता की प्रकृति
- लागत संरचना
- मांग की लोच
- उपभोक्ता व्यवहार (प्रेरणा, दृष्टिकोण, वरीयताएँ, आवश्यकताएँ)



➤ वितरण चैनल

उत्पादन वास्तव में शुरू होने से पहले, उद्यमी को उत्पाद के लिए संभावित बाजार का अनुमान लगाने की आवश्यकता होती है। उसे यह अनुमान लगाना होगा कि उसके उत्पाद के संभावित ग्राहक कौन होंगे और उसका उत्पाद कहाँ और कब बेचा जाएगा। इस संबंध में एक पुरानी कहावत है: "लोहे की कीलों का निर्माता"

➤ प्रबंधकीय मूल्यांकन:

प्रबंधकीय मूल्यांकन पर प्रबंधक बुनियादी प्रबंधकीय कार्यों, नियोजन, आयोजन, नेतृत्व, प्रेरणा, स्टाफिंग और नियंत्रण करके संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं। इनमें से प्रत्येक कार्य कई या गतिविधियों की श्रृंखला का प्रदर्शन करके किया जा सकता है

➤ उद्देश्यों द्वारा प्रबंधन (एमबीओ)

1. 360-डिग्री प्रतिक्रिया।
2. आकलन केंद्र विधि।
3. बिहेवियरली एंकरेड रेटिंग स्केल (BARS)
4. मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन
5. मानव-संसाधन (लागत) लेखा पद्धति।

1. उद्देश्यों द्वारा प्रबंधन (एमबीओ)

उद्देश्यों द्वारा प्रबंधन (एमबीओ) एक मूल्यांकन पद्धति है जहां प्रबंधक और कर्मचारी एक विशिष्ट मूल्यांकन अवधि के दौरान ध्यान केंद्रित करने के लिए उद्देश्यों की पहचान, योजना, आयोजन और संचार करते हैं। स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने के बाद, प्रबंधक और अधीनस्थ समय-समय पर उन निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने की व्यवहार्यता पर नियंत्रण और बहस के लिए हुई प्रगति पर चर्चा करते हैं।

इस प्रदर्शन मूल्यांकन पद्धति का उपयोग कर्मचारियों के उद्देश्यों के साथ व्यापक संगठनात्मक लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से मिलान करने के लिए किया जाता है, जबकि यह देखने के लिए कि क्या निर्धारित उद्देश्य विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, यथार्थवादी और समय के प्रति संवेदनशील हैं, स्मार्ट पद्धति का उपयोग करके उद्देश्यों को मान्य करता है।

2. 360-डिग्री फीडबैक

360-डिग्री फीडबैक एक बहुआयामी प्रदर्शन मूल्यांकन पद्धति है जो कर्मचारी के प्रभाव के सर्कल से एकत्रित फीडबैक का उपयोग करके एक कर्मचारी का मूल्यांकन करती है, अर्थात् प्रबंधकों, साथियों,



ग्राहकों और प्रत्यक्ष रिपोर्ट। यह विधि न केवल प्रदर्शन समीक्षाओं में पूर्वाग्रह को समाप्त करेगी बल्कि किसी व्यक्ति की क्षमता की स्पष्ट समझ भी प्रदान करेगी।

इस मूल्यांकन पद्धति में पाँच अभिन्न अंग हैं जैसे:

1. स्व-मूल्यांकन

स्व-मूल्यांकन कर्मचारियों को उनके प्रदर्शन को देखने और उनकी ताकत और कमजोरियों को समझने का मौका देता है। हालांकि, अगर स्व-मूल्यांकन संरचित रूपों या औपचारिक प्रक्रियाओं के बिना किया जाता है, तो यह उदार, चंचल और पक्षपाती हो सकता है।

2. प्रबंधकीय समीक्षा

प्रबंधकों द्वारा की गई प्रदर्शन समीक्षाएं मूल्यांकन के पारंपरिक और बुनियादी रूप का एक हिस्सा हैं। इन समीक्षाओं में पर्यवेक्षकों द्वारा प्रदान की गई व्यक्तिगत कर्मचारी रेटिंग के साथ-साथ वरिष्ठ प्रबंधकों द्वारा किए गए एक टीम या कार्यक्रम का मूल्यांकन शामिल होना चाहिए।

3. सहकर्मी समीक्षा

जैसे-जैसे पदानुक्रम संगठनात्मक तस्वीर से बाहर निकलते हैं, सहकर्मियों को कर्मचारी के प्रदर्शन पर एक अनूठा दृष्टिकोण मिलता है जिससे वे सबसे अधिक प्रासंगिक मूल्यांकनकर्ता बन जाते हैं। ये समीक्षाएं एक कर्मचारी की टीम के साथ अच्छी तरह से काम करने, पहल करने और एक विश्वसनीय योगदानकर्ता बनने की क्षमता को निर्धारित करने में मदद करती हैं। हालांकि, साथियों के बीच दोस्ती या दुश्मनी अंतिम मूल्यांकन परिणामों को विकृत कर सकती है।

4. अधीनस्थ मूल्यांकन प्रबंधक (एसएएम)

360-डिग्री फीडबैक का यह ऊपर की ओर मूल्यांकन घटक एक नाजुक और महत्वपूर्ण कदम है। प्रबंधकीय दृष्टिकोण से रिपोर्टर सबसे विशिष्ट दृष्टिकोण रखते हैं। हालांकि, प्रतिशोध की अनिच्छा या डर मूल्यांकन के परिणामों को तिरछा कर सकता है।

5. ग्राहक या ग्राहक समीक्षा

इस चरण के ग्राहक घटक में या तो आंतरिक ग्राहक शामिल हो सकते हैं जैसे संगठन के भीतर उत्पाद के उपयोगकर्ता या बाहरी ग्राहक जो कंपनी का हिस्सा नहीं हैं, लेकिन नियमित रूप से इस विशिष्ट कर्मचारी के साथ बातचीत करते हैं।

ग्राहक समीक्षाएं किसी कर्मचारी के आउटपुट का बेहतर मूल्यांकन कर सकती हैं, हालांकि, ये बाहरी उपयोगकर्ता अक्सर किसी कर्मचारी के आउटपुट पर प्रक्रियाओं या नीतियों के प्रभाव को नहीं देखते हैं।

1. आकलन केंद्र विधि

मूल्यांकन केंद्र की अवधारणा 1930 में जर्मन सेना द्वारा शुरू की गई थी, लेकिन इसे आज के परिवेश के अनुरूप पॉलिश और सिलवाया गया है। मूल्यांकन केंद्र पद्धति कर्मचारियों को एक स्पष्ट तस्वीर प्राप्त करने में सक्षम बनाती है कि दूसरे उन्हें कैसे देखते हैं और उनके प्रदर्शन पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। इस पद्धति का मुख्य लाभ यह है कि यह न केवल किसी व्यक्ति के मौजूदा प्रदर्शन का आकलन करेगा बल्कि भविष्य की नौकरी के प्रदर्शन की भविष्यवाणी भी करेगा।

1. बिहेवियरली एंकरेड रेटिंग स्केल (BARS)

व्यवहारिक रूप से एंकर रेटिंग स्केल (बीएआरएस) एक प्रदर्शन मूल्यांकन प्रक्रिया में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों लाभ लाते हैं। BARS विशिष्ट व्यवहार उदाहरणों के साथ कर्मचारी के प्रदर्शन की



तुलना करता है जो संख्यात्मक रेटिंग के लिए लंगर डाले हुए हैं। BAR पैमाने पर प्रत्येक प्रदर्शन स्तर को कई BARS स्टेटमेंट्स द्वारा एंकर किया जाता है जो सामान्य व्यवहार का वर्णन करते हैं जो एक कर्मचारी नियमित रूप से प्रदर्शित करता है। ये बयान पूर्व निर्धारित मानकों के खिलाफ किसी व्यक्ति के प्रदर्शन को मापने के लिए एक मानदंड के रूप में कार्य करते हैं जो उनकी भूमिका और नौकरी के स्तर पर लागू होते हैं।

2. मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन

कर्मचारियों की छिपी क्षमता को निर्धारित करने के लिए मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन काम में आते हैं। यह विधि किसी कर्मचारी के पिछले कार्य के बजाय उसके भविष्य के प्रदर्शन का विश्लेषण करने पर केंद्रित है। इन मूल्यांकनों का उपयोग कर्मचारी के प्रदर्शन के सात प्रमुख घटकों जैसे पारस्परिक कौशल, संज्ञानात्मक क्षमता, बौद्धिक लक्षण, नेतृत्व कौशल, व्यक्तित्व लक्षण, भावनात्मक भागफल और अन्य संबंधित कौशल का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।

योग्य मनोवैज्ञानिक किसी कर्मचारी का प्रभावी ढंग से आकलन करने के लिए कई तरह के परीक्षण (गहन साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, चर्चा, और बहुत कुछ) करते हैं। हालाँकि, यह एक धीमी और जटिल प्रक्रिया है और परिणामों की गुणवत्ता उस मनोवैज्ञानिक पर अत्यधिक निर्भर है जो प्रक्रिया का संचालन करता है।

7. मानव-संसाधन (लागत) लेखा पद्धति

मानव संसाधन (लागत) लेखा पद्धति एक कर्मचारी के प्रदर्शन का विश्लेषण कंपनी को मिलने वाले मौद्रिक लाभों के माध्यम से करती है। यह एक कर्मचारी को बनाए रखने की लागत (कंपनी की लागत) और उस विशिष्ट कर्मचारी से एक संगठन द्वारा प्राप्त मौद्रिक लाभ (योगदान) की तुलना करके प्राप्त किया जाता है।

जब किसी कर्मचारी के प्रदर्शन का मूल्यांकन लागत लेखांकन विधियों के आधार पर किया जाता है, तो यूनिट-वार औसत सेवा मूल्य, गुणवत्ता, ओवरहेड लागत, पारस्परिक संबंध और बहुत कुछ जैसे कारकों को ध्यान में रखा जाता है। लागत और लाभ विश्लेषण पर इसकी उच्च निर्भरता और समीक्षक की स्मृति शक्ति मानव संसाधन लेखांकन पद्धति का दोष है।



अध्याय - 04: परियोजना कार्यान्वयन एवं निगरानी

परियोजना कार्यान्वयन एवं निगरानी

कार्यान्वयन वित्त और जोखिम के प्रबंधन के दौरान गतिविधियों, आउटपुट, परिणाम और प्रभाव देने के लिए उठाए गए कदमों के एक चक्र को संदर्भित करता है।

कार्यान्वयन के दौरान समस्याओं के कारण अक्सर सुचारु रूप से चलने वाली परियोजना पर काली नजर आती है। वे समस्याएं अक्सर सामने आती हैं क्योंकि हम समाधान को लागू करने की जटिलता का अनुमान और योजना नहीं बनाते हैं।

एक परियोजना के कार्यान्वयन चरण में विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना शामिल है, जिसमें कई चरण शामिल हैं: (i) परियोजना और इंजीनियरिंग डिजाइन, (ii) बातचीत और अनुबंध, (iii) निर्माण (iv) प्रशिक्षण, और (v) संयंत्र चालू करना। इन चरणों में जो किया गया उसका संक्षेप में वर्णन नीचे किया गया है:

(i) परियोजना और इंजीनियरिंग डिजाइन- परियोजना कार्यान्वयन परियोजना की परियोजनाओं और इंजीनियरिंग डिजाइन के साथ शुरू होता है। इस चरण में सहकारी समितियों/एफपीओ सहकारी समितियों द्वारा की जाने वाली प्रमुख गतिविधियाँ हैं -

- क. साइट जांच और विकास।
- ख. गतिविधियों के ब्लू प्रिंट तैयार करना।
- ग. संयंत्र डिजाइन और इंजीनियरिंग।
- घ. विशिष्ट मशीनरी और उपकरणों का चयन।

(ii) बातचीत और अनुबंध- परियोजनाओं और इंजीनियरिंग डिजाइन के पूरा होने के बाद एक सहकारी / एफपीओ सहकारी को अपनी परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न अनुबंधों को अंतिम रूप देने की आवश्यकता होती है। इस चरण में सहकारिताओं/एफपीओ सहकारिताओं द्वारा की जाने वाली प्रमुख गतिविधियाँ हैं:

- क. वित्तीय संस्थान के साथ परियोजनाओं के वित्त के संबंध में कानूनी अनुबंधों पर बातचीत करना और तैयार करना।
- ख. भवन और सिविल कार्यों का निर्माण।
- ग. उपयोगिताओं का प्रावधान।
- घ. मशीनरी और उपकरणों की आपूर्ति।
- ड. विपणन व्यवस्था।
- च. तकनीकी जानकारी कैसे।

(iii) निर्माण- विभिन्न अनुबंधों को अंतिम रूप देने और प्रदान करने के बाद एक सहकारिता / एफपीओ सहकारिताओं को निम्नलिखित गतिविधियों को करने की आवश्यकता होती है-

- (क) साइट की तैयारी
- (ख) भवन और सिविल कार्यों का निर्माण



(ग) मशीनरी और उपकरणों का निर्माण और स्थापना।

(iv) प्रशिक्षण- इस चरण में इंजीनियरों, तकनीशियनों और कार्यों का प्रशिक्षण होता है। निर्माण कार्य के साथ-साथ प्रशिक्षण भी एक साथ आगे बढ़ सकता है।

(v) प्लांट कमीशनिंग-प्लांट का स्टार्ट अप।

एक निवेश प्रस्ताव को एक ठोस परियोजना में अनुवाद करना एक जटिल, समय लेने वाला और जोखिम भरा कार्य है। कार्यान्वयन में देरी, जो सामान्य है, लागत में भारी वृद्धि का कारण बन सकती है।

सफल परियोजना कार्यान्वयन की पूर्व-आवश्यकताएँ

भारत में, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में, परियोजनाओं का समय और लागत अधिक होना बहुत आम है। ऐसे समय और लागत के अधिक होने के कारण, परियोजनाएं गैर-आर्थिक हो जाती हैं, अन्य परियोजनाओं का समर्थन करने के लिए संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं, और आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

समय और लागत की अधिकता को कम करने के लिए क्या किया जा सकता है और इस तरह परियोजनाओं के सफल समापन की संभावनाओं में सुधार किया जा सकता है? जबकि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुत सी चीजें की जा सकती हैं, उनमें से अधिक महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं-

(i) सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल करते हुए पर्याप्त परियोजना तैयार करना।

(ii) अच्छे और सक्षम नेता वाले ध्वनि परियोजना संगठन।

(iii) उचित कार्यान्वयन योजना

(iv) भूमि अधिग्रहण, मूर्ति मंजूरी लेने, सहयोग/परामर्शदाता की पहचान, प्रारंभिक डिजाइन आदि जैसी गतिविधियों के लिए अग्रिम कार्रवाई।

(v) निधि की समय पर उपलब्धता।

(vi) विवेकपूर्ण निविदा और खरीद

(vii) बेहतर अनुबंध प्रबंधन

(viii) प्रभावी निगरानी

परियोजना निगरानी

परियोजना निगरानी को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे परियोजना निष्पादन की प्रगति को ट्रैक करने के लिए किया जाता है ताकि परियोजना के निष्पादन को नियंत्रित करने के उद्देश्य से सुधारात्मक कार्रवाई करने के लिए संभावित समस्याओं की समय पर पहचान की जा सके।



परियोजना निगरानी परियोजना प्रबंधन का एक अभिन्न अंग है। यह परियोजना की प्रगति की समझ प्रदान करता है ताकि प्रदर्शन नियोजित पथ से महत्वपूर्ण रूप से विचलित होने पर उचित सुधारात्मक कार्रवाई की जा सके। इसमें पूर्व निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों के खिलाफ परियोजना कार्यान्वयन की प्रगति को ट्रैक करने के लिए नियमित रूप से व्यवस्थित संग्रह और जानकारी का विश्लेषण शामिल है। यह एक महत्वपूर्ण प्रबंधन उपकरण है, जिसका यदि ठीक से उपयोग किया जाता है, तो परियोजना कार्यान्वयन प्रगति पर निरंतर प्रतिक्रिया प्रदान करता है और साथ ही समय पर निर्णय लेने की सुविधा के लिए संभावित सफलताओं और बाधाओं की पहचान में सहायता करता है।

परियोजना की प्रभावी निगरानी अच्छे परियोजना प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। यह प्रबंधन द्वारा सूचित और समय पर निर्णय लेने का समर्थन करता है और परिणाम प्राप्त करने के लिए जवाबदेही प्रदान करता है। यह परियोजना चक्र प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसे योजना चरण में परियोजना में बनाया जाना है। यह एक 'एड ऑन' टूल नहीं है जिसका उपयोग परियोजना कार्यान्वयन के बीच में किया जा सकता है। दूसरी ओर, इसे पूरे प्रोजेक्ट में बुना जाना है।

परियोजना की निगरानी गतिविधियों को परियोजना निष्पादन गतिविधियों के समानांतर किया जाता है, ताकि जब परियोजना कार्य निष्पादित किया जा रहा हो, मध्य-मार्ग सुधारात्मक कार्यों के उद्देश्य के लिए उचित स्तर की निगरानी को लागू करके परियोजना की निगरानी की जा रही है। परियोजना की प्रगति की उच्च गुणवत्ता निगरानी समय पर निर्णय लेने को प्रोत्साहित करती है, परियोजना की जवाबदेही सुनिश्चित करती है, और परियोजना के सफल समापन के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है। यह परियोजना के प्रदर्शन की निरंतर निगरानी के माध्यम से है कि प्रबंधन के पास यह जानने का अवसर है कि क्या अच्छा काम कर रहा है, क्या पिछड़ रहा है और कौन सी चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

परियोजना निगरानी गतिविधियाँ:

परियोजना निगरानी गतिविधियाँ में शामिल

(i) नियोजित परियोजना प्रगति की तुलना में वास्तविक परियोजना प्रगति की निगरानी और प्रमुख प्रगति मीट्रिक जैसे जोखिम, मुद्दे, परिवर्तन और निर्भरता का संग्रह, और

(ii) प्रबंधन को सारांश स्तर पर परियोजना की स्थिति, लागत और आउटपुट और अन्य प्रासंगिक जानकारी की रिपोर्टिंग। परियोजना की निगरानी और रिपोर्टिंग का प्रारूप और समय प्रत्येक संगठन में भिन्न होता है और यह परियोजना के आकार, अवधि, जोखिम और जटिलता जैसी वस्तुओं पर भी निर्भर करता है।

यह सुनिश्चित करने के लिए परियोजना की निगरानी की जाती है-

(i) स्थापित कार्यक्रम और सफलता के संकेतकों के खिलाफ परियोजना गतिविधियों की प्रगति को मापना,

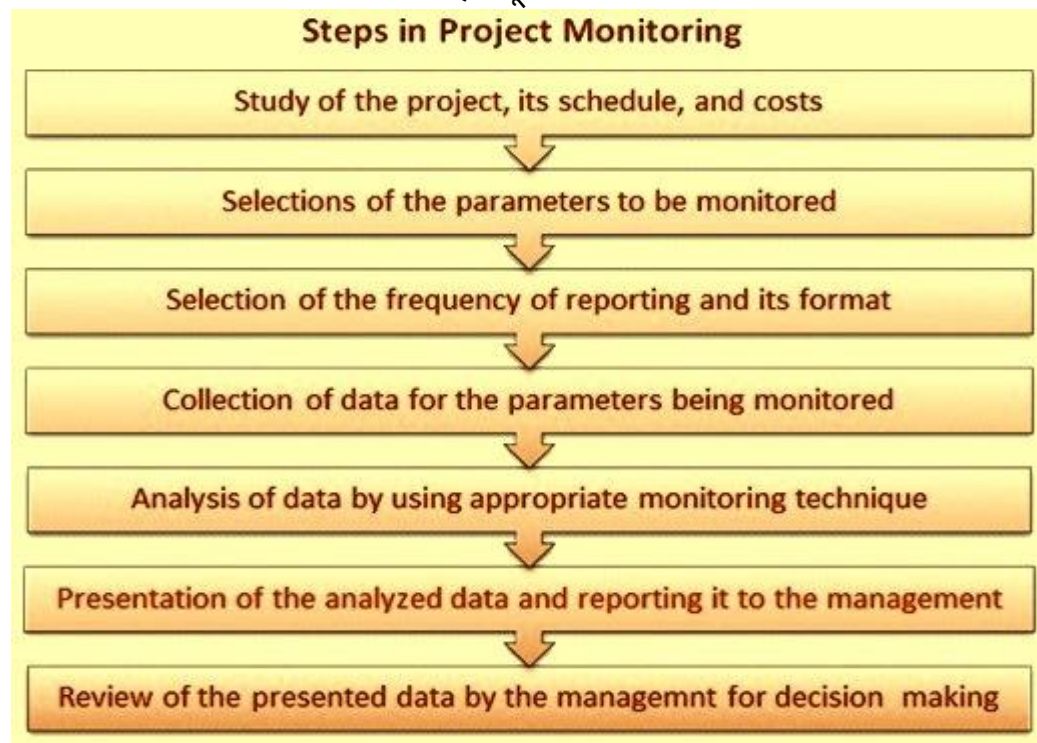
(ii) परियोजना गतिविधियों की प्रगति को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना,



(iii) परियोजना गतिविधियों पर लिए गए निर्णय की प्रतिक्रिया और परियोजना कार्यान्वयन की प्रगति पर इसके प्रभाव को मापना, और

(i) परियोजना की विफलता के जोखिम को कम करने के लिए।

(ii) परियोजना की निगरानी का समय और तरीका परियोजना प्रबंधन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। परियोजना निगरानी में महत्वपूर्ण कदमों में निम्नलिखित शामिल हैं।



परियोजना निगरानी प्रक्रिया

- विभिन्न प्रक्रियाएँ और उपकरण हैं जिनका उपयोग आम तौर पर परियोजना की निगरानी में सहायता के लिए किया जाता है। परियोजना निगरानी की प्रक्रिया में आम तौर पर निगरानी डेटा प्राप्त करना, विश्लेषण करना और रिपोर्ट तैयार करना शामिल होता है। निगरानी के लिए उपयोग की जाने वाली विशिष्ट प्रक्रियाएँ और उपकरण परियोजना से परियोजना में भिन्न हो सकते हैं और निगरानी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी भिन्न हो सकते हैं, लेकिन कुछ समग्र सर्वोत्तम प्रथाएँ हैं, जिनका सारांश नीचे दिया गया है।
- परियोजना की निगरानी, परियोजना की जरूरतों, विशिष्ट दर्शकों और उपयोगों को पूरा करने के लिए अच्छी तरह से केंद्रित होना चाहिए। यह पर्याप्त होना चाहिए और जो आवश्यक है उस तक सीमित होना चाहिए।
- पूर्वनिर्धारित संकेतकों और धारणाओं के आधार पर निगरानी व्यवस्थित होनी चाहिए।



- निगरानी परियोजना में होने वाले अप्रत्याशित परिवर्तनों और इसके संदर्भ में देखने के लिए भी है, जिसमें परियोजना की धारणाओं/जोखिमों में कोई बदलाव भी शामिल है। यह जानकारी परियोजना कार्यान्वयन योजनाओं को समायोजित करने के लिए उपयोगी है।
- निगरानी समय पर करने की आवश्यकता है, ताकि यह परियोजना कार्यान्वयन की दिशा में की गई प्रगति को समय पर सूचित कर सके।
- जहां तक संभव हो, निगरानी प्रमुख खिलाड़ियों की भागीदारी के साथ भागीदारी के लिए है। यह परियोजना निगरानी के विश्लेषण किए गए डेटा की समझ और स्वामित्व में मदद करता है।
- निगरानी की जानकारी न केवल परियोजना प्रबंधन के लिए है बल्कि परियोजना के सभी प्रमुख खिलाड़ियों के साथ साझा करने की आवश्यकता है।
- परियोजना निगरानी के लिए सबसे व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले कुछ उपकरण, और उनकी सीमाओं में निम्नलिखित शामिल हैं।
- मौखिक संचार - यह संचार का शायद सबसे प्रभावी तरीका है। इसके फायदों में यह है कि यह त्वरित है, और इसकी प्रस्तुति को दर्शकों की चिंताओं और प्रश्नों के अनुकूल बनाया जा सकता है। हालांकि, निगरानी जानकारी को संप्रेषित करने के लिए इस प्रकार के उपकरण से गलतफहमी हो सकती है और कभी-कभी जानकारी से इनकार किया जा सकता है।
- लिखित संचार - यह संचार का शायद सबसे विश्वसनीय तरीका है। इसके फायदों में से यह स्पष्ट डेटा प्रदान करता है और किसी भी गलतफहमी की संभावना को दूर करता है। हालांकि, संचार के लिखित मोड के माध्यम से निगरानी डेटा प्राप्त करने के लिए समय और आम तौर पर लगातार अनुवर्ती कार्रवाई की आवश्यकता होती है।
- बैठकें - परियोजना प्रबंधन की प्रकृति यह अपरिहार्य बनाती है कि परियोजना की जानकारी को संप्रेषित करने और साझा करने के लिए कुछ बैठकें बुलाई जाती हैं। परियोजना की निगरानी के लिए डेटा के संग्रह के लिए परियोजना कार्यान्वयन से जुड़े विभिन्न खिलाड़ियों के साथ बैठकों की भी आवश्यकता हो सकती है। हालांकि, परियोजना की निगरानी के लिए उपकरण के रूप में प्रभावी होने के लिए बैठकें जानकारी साझा करने और आदान-प्रदान करने, स्पष्टीकरण देने, प्रेरणादायक और परियोजना के प्रदर्शन के संबंध में सर्वोत्तम समाधान प्राप्त करने के लिए केंद्रित हैं।
- रिपोर्ट - निगरानी रिपोर्ट महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे परियोजना निगरानी का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। की गई गतिविधियों, आपूर्ति की गई निविष्टियों, संवितरित निधियों आदि को रिपोर्ट में दर्ज किया जाना चाहिए और उनका लेखा-जोखा रखा जाना चाहिए। हालांकि, रिपोर्ट केवल तभी प्रभावी होती हैं जब उन्हें सही समय पर सही लोगों को सही निर्णय लेने की सुविधा के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इसके अलावा रिपोर्ट संक्षिप्त और बिंदु तक होनी चाहिए ताकि उन पर आवश्यक ध्यान दिया जा सके।
- डायरी नोट - जबकि परियोजना निगरानी में शामिल कई लोग जानकारी दर्ज करने के इस तरीके का उपयोग नहीं करते हैं, यह एक महत्वपूर्ण विकल्प बना हुआ है। औपचारिक या अनौपचारिक बैठकों में किए गए महत्वपूर्ण निर्णयों को रिकॉर्ड करना आवश्यक है। हालांकि, डायरी नोट लेते समय यह



सुनिश्चित करना होगा कि निर्णय लेते समय दिनांक, समय, स्थान और उपस्थित लोगों के नाम शामिल हों।

परियोजना निगरानी उपकरण

परियोजना की निगरानी के दौरान एकत्र किए गए डेटा का सामान्य रूप से विश्लेषण किया जाता है और कई उपकरणों के सक्रिय उपयोग के साथ प्रबंधन को प्रस्तुत किया जाता है। इन उपकरणों में शामिल हैं (i) महत्वपूर्ण पथ विश्लेषण (सीपीए), (ii) विचरण विश्लेषण, (iii) कार्यक्रम मूल्यांकन और समीक्षा तकनीक (पीइआरटी) चार्ट, (iv) गैट या बार चार्ट, (v) कार्य विश्लेषण संरचना (डब्ल्यूबीएस) तकनीक, (vi) अर्जित मूल्य विश्लेषण, (vii) महत्वपूर्ण अनुपात, (viii) तार्किक ढांचा मैट्रिक्स, (ix) बेंचमार्किंग तकनीक, और (x) विशेष सूचना कार्यक्रम, आदि। प्रगति की निगरानी आमतौर पर परियोजना निष्पादन के लिए नियोजित कुछ मील के पथ के खिलाफ की जाती है। . परियोजना निगरानी का विश्लेषण किया गया डेटा परियोजना प्रबंधन सूचना प्रणाली (पीएमआईएस) का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

परियोजना निगरानी में समस्याएं/मुद्दे

- कई रिपोर्ट प्रभावी ढंग से उपयोग किए बिना कार्यालयों में धूल फांकती हैं।
- कभी-कभी गलत जानकारी एकत्र और विश्लेषण की जाती है, जो निर्णय लेने में उपयोगी नहीं हो सकती है।
- कुछ विभाग या इकाइयाँ परियोजना निगरानी के लिए आवश्यक सूचना उपलब्ध कराने में गंभीर नहीं हैं। ये विभाग सूचना देने में लापरवाही बरत रहे हैं।
- कई बार प्रबंधन को प्रस्तुत की गई रिपोर्टों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है और इसलिए परियोजना की निगरानी में शामिल लोगों को गंभीर रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रेरणा नहीं मिलती है।

xxx



अध्याय 5: सहकारी समितियों के विकास में एनसीडीसी और इसकी योजनाओं की भूमिका

एनसीडीसी के विषय में:

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) की स्थापना 1963 में संसद के एक अधिनियम द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत एक सावधिकनिगम के रूप में की गई थी।

कार्य:

कृषि उत्पाद, खाद्य सामग्री, कुछ अन्य अधिसूचित वस्तुओं के उत्पादन, प्रसंस्करण, विपणन, भंडारण, निर्यात और आयात योजना, प्रचार और वित्तपोषण करना है। उर्वरक, कीटनाशक, कृषि मशीनरी, लाख, साबुन, मिट्टी का तेल, कपड़ा, रबर आदि, उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति और सहकारी समितियों के माध्यम से लघु वनोपज का संग्रह, प्रसंस्करण, विपणन, भंडारण और निर्यात, मुर्गी पालन जैसी गतिविधियों की आय उत्पन्न करने वाली धारा के अलावा, डेयरी, मत्स्य पालन, रेशम उत्पादन, हथकरघा आदि।

एनसीडीसी अधिनियम में और संशोधन किया गया है जो विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियों की सहायता करने और अपने वित्तीय आधार का विस्तार करने के लिए निगम के संचालन के क्षेत्र को व्यापक आधार देगा। एनसीडीसी अब ग्रामीण औद्योगिक सहकारी क्षेत्रों में परियोजनाओं और ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ अधिसूचित सेवाओं जैसे जल संरक्षण, सिंचाई और सूक्ष्म सिंचाई, कृषि बीमा, कृषि ऋण, ग्रामीण स्वच्छता, पशु स्वास्थ्य, आदि के लिए वित्तपोषण करने में सक्षम होगा।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की सहकारी समितियों के वित्तपोषण के लिए राज्य सरकारों को ऋण और अनुदान दिए जाते हैं और सीधे राष्ट्रीय स्तर और एक राज्य से आगे तक फैली हुई अन्य समितियों को दिए जाते हैं। अब, निगम निर्धारित शर्तों को पूरा करने पर सहायता की अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत परियोजनाओं के प्रत्यक्ष वित्त पोषण के लिए भी जा सकता है।

जिन उद्देश्यों के लिए सहायता प्रदान की जाती है:

- ❖ कार्यशील पूंजी वित्त जुटाने के लिए मार्जिन राशि (100% ऋण)
- ❖ सोसायटियों के शेयर पूंजी आधार का सुदृढीकरण (100% ऋण)
- ❖ क्षेत्रीय/राज्य स्तरीय विपणन संघों को कार्यशील पूंजी (100% ऋण)
- ❖ गोदामों, कोल्ड स्टोरेज, उपकरण वित्तपोषण, परिवहन वाहनों, नावों और अन्य मूर्त संपत्तियों की खरीद जैसी बुनियादी सुविधाओं के निर्माण के लिए सावधि ऋण
- ❖ कृषि-प्रसंस्करण उद्योगों के नए, आधुनिकीकरण/विस्तार/पुनर्वास/विविधीकरण की स्थापना के लिए सावधि और निवेश ऋण।
- ❖ परियोजना रिपोर्ट/व्यवहार्यता अध्ययन आदि तैयार करने के लिए सब्सिडी।

एनसीडीसी द्वारा वित्त पोषित गतिविधियां

क) विपणन

- 🚩 विपणन संघों को मार्जिन मनी सहायता
- 🚩 प्राथमिक/जिला विपणन समितियों के शेयर पूंजी आधार को सुदृढ बनाना
- 🚩 मार्केटिंग (फल और सब्जी)\
- 🚩 कार्यशील पूंजी वित्त

ख) प्रसंस्करण



- ✚ नई चीनी मिलों की स्थापना (निवेश ऋण)/मौजूदा चीनी कारखानों का आधुनिकीकरण और विस्तार/विविधीकरण (निवेश ऋण + सावधि ऋण)
- ✚ सहकारी कताई मिलों / राज्य सहकारी कपास संघों को मार्जिन मनी सहायता / नई कताई मिलों में शेयर पूंजी भागीदारी / आधुनिकीकरण / कताई मिलों का विस्तार / मौजूदा का आधुनिकीकरण और आधुनिक जिनिंग और प्रेसिंग इकाइयों की स्थापना / बीमार कताई मिलों का पुनर्वास / कपास विकास कार्यक्रम
- ✚ अन्य प्रसंस्करण इकाइयाँ: खाद्यान्न / तिलहन / वृक्षारोपण फसलें / कपास की जुताई और प्रेसिंग / फल और सब्जी / मक्का स्टार्च / कण बोर्ड, आदि।
- ✚ करघा से पहले और बाद की सुविधाओं को कवर करने वाली पावर लूम सहकारी समितियां

ग) सहकारी भंडारण

- ✚ गोदामों का निर्माण (सामान्य)
- ✚ मौजूदा गोदामों का उन्नयन/नवीनीकरण
- ✚ कोल्ड स्टोरेज का निर्माण / कोल्ड स्टोरेज का उन्नयन / पुनर्वास

घ) सहकारी समितियों के माध्यम से आवश्यक वस्तुओं का वितरण

- ✚ ग्रामीण/शहरी/अर्द्ध शहरी क्षेत्रों में उपभोक्ता वस्तुओं का वितरण।

ई) औद्योगिक सहकारिता

- ✚ सभी प्रकार की औद्योगिक सहकारिताएं, कुटीर एवं ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प/ग्रामीण शिल्प आदि।

च) सेवा सहकारी समितियां

- ✚ कृषि ऋण
- ✚ कृषि बीमा
- ✚ श्रम सहकारिता
- ✚ जल संरक्षण कार्य/सेवाएं
- ✚ ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई, सूक्ष्म सिंचाई
- ✚ पशु देखभाल/स्वास्थ्य रोग की रोकथाम
- ✚ सहकारी समितियों के माध्यम से ग्रामीण स्वच्छता / जल निकासी / सीवेज प्रणाली

छ) कृषि सेवाएं

- ✚ सहकारी किसान सेवा केंद्र
- ✚ कस्टम हायरिंग के लिए कृषि सेवा केंद्र
- ✚ कृषि आदानों के निर्माण और संबद्ध इकाइयों की स्थापना।
- ✚ सिंचाई/जल संचयन कार्यक्रम।

ज) जिला योजना योजनाएं

चयनित जिलों में एकीकृत सहकारी विकास परियोजनाएं (आईसीडीपी)

i) कमजोर वर्गों के लिए सहकारिता

- ✚ मछली पालन
- ✚ डेरी



- ✚ मुर्गी पालन
- ✚ जनजातीय
- ✚ हथकरघा
- ✚ काँयर और रेशम उत्पादन

ट कम्प्यूटरीकरण के लिए सहायता

ठ संवर्धनात्मक एवं विकास कार्यक्रम

- ✚ तकनीकी और प्रचार प्रकोष्ठ
- ✚ अध्ययन / परियोजना रिपोर्ट, प्रबंधन अध्ययन, बाजार सर्वेक्षण और कार्यक्रमों के मूल्यांकन आदि के लिए परामर्श।
- ✚ प्रशिक्षण और शिक्षा

एल) परामर्श सेवाएं

एनसीडीसी द्वारा वर्षों से विकसित विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए जनवरी 2004 में "एनसीडीसी कंसल्टेंसी सर्विसेज डिवीजन" (एनसीएस) की स्थापना की गई थी। एनसीडीसी विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियों, अन्य वित्तीय संस्थानों, विभागों और विभिन्न मंत्रालयों के संगठनों के लाभ के लिए परामर्श सेवाएं प्रदान करना जारी रखता है। परामर्श बहुत मामूली शुल्क पर दिया जाता है और एनसीडीसी ऐसी परियोजनाओं के वित्तपोषण पर भी अपने सामान्य नियमों और शर्तों के अनुसार विचार करता है। एनसीडीसी का परामर्श उद्देश्य उन्मुख, कुशल, समयबद्ध, लागत प्रभावी और ग्राहकों के अनुकूल है ताकि संगठनों को उनकी गतिविधियों के विस्तार/विविधीकरण, मूल्यवर्धन, मानव संसाधन विकास आदि में मदद मिल सके, जिससे वे आत्मनिर्भर बनने में सक्षम हो सकें। एनसीडीसी निम्नलिखित क्षेत्रों में परामर्श प्रदान करता है:

- ✚ परियोजना निर्माण और व्यवहार्यता अध्ययन
- ✚ परियोजनाओं का मूल्यांकन
- ✚ परियोजनाओं की निगरानी
- ✚ निवेश संभावित सर्वेक्षण
- ✚ वित्तपोषण व्यवस्था और ऋण सामुहिकीकरण
- ✚ घरेलू विपणन और कृषि उपज का आयात/निर्यात
- ✚ सहकारी समितियों की प्रदर्शन रेटिंग
- ✚ प्रशिक्षण और एक्सपोजर विज़िट

नई योजनाएं

- ✚ पर्यटन, आतिथ्य, परिवहन, बिजली (नए/गैर-पारंपरिक) और ग्रामीण आवास कार्यक्रमों के लिए सहकारी समितियों को वित्तीय सहायता - दिशानिर्देश
- ✚ अस्पताल, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के लिए सहकारी समितियों को वित्तीय सहायता - दिशानिर्देश
- ✚ एनसीडीसी का कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रम - दिशानिर्देश



- ✚ सेवानिवृत्त अधिकारियों की व्यावसायिक विशेषज्ञता का उपयोग करके निगम के निगरानी और मूल्यांकन कार्यों को सुदृढ़ करने की योजना
- ✚ कृषि ऋण सहकारी समितियों को कार्यशील पूंजी के लिए एनसीडीसी के अल्पावधि ऋण देने की योजना

सहकार 22: नए भारत के लिए एक एनसीडीसी मिशन 2022

- ✓ भारत में 300 मिलियन सदस्यों के साथ 01 मिलियन सहकारी समितियां हैं, जिनमें अधिकतर किसान हैं
- ✓ एनसीडीसी सीधे किसानों तक पहुंचता है
- ✓ एनसीडीसी ने सीओओपी की विविध रैंज को वित्तीय सहायता प्रदान की है:
- ✓ क्रेडिट और गैर-क्रेडिट सहकारी समितियां।
- ✓ छोटे (उर्वरक जैसे आपूर्ति इनपुट) से बहुत बड़े (डेयरी/चीनी/वस्त्र)
- ✓ छोटे सहकारी बैंक से लेकर बड़े सहकारी बैंक- यूसीबी, डीसीसीबी, एसटीसीबी
- ✓ बड़ी निर्यातोन्मुखी झींगा प्रसंस्करण इकाइयों के लिए छोटी मछली तालाब आधारित गतिविधि
- ✓ छोटे उपभोक्ता स्टोर से लेकर बड़ी रिटेल चेन / मॉल तक
- ✓ छोटे स्वास्थ्य केंद्र से बड़े अस्पतालों तक
- ✓ एनसीडीसी लगभग शून्य एनपीए सांविधिक संगठन है जो केवल सहकारिताओं के लिए है
- ✓ एनसीडीसी का उद्देश्य सहकारी समितियों द्वारा उनकी खरीद के माध्यम से इनपुट की लागत में कमी करना है
- ✓ बढ़ी हुई बिक्री के माध्यम से थोक और आउटपुट मूल्य वृद्धि
- ✓ एनसीडीसी सहकारी समितियों को सालाना 20,000 करोड़ रुपये से अधिक का अग्रिम देता है
- ✓ सहकारी समितियों के किसान सदस्यों को बुनियादी ढांचे, प्रसंस्करण और प्रतिस्पर्धी ऋण के माध्यम से व्यापक मूल्यवर्धन पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- ✓ एनसीडीसी ने लगभग 400 जिलों में सहकारी समितियों की सहायता की है और 18 राज्यों में इसके कार्यालय हैं।
- ✓ एनसीडीसी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के साथ मिलकर काम करता है।
- ✓ एनसीडीसी कठोर औपचारिक ऋण संस्थानों और साहूकारों और व्यापारियों के शोषण से राहत देता है।

सहकारिता में 2022 तक नए भारत के मिशन को प्राप्त करने के लिए, किसानों की आय को दोगुना करके, एनसीडीसी एक नई मिशन मोड गतिविधि, सहकार 22 शुरू करेगा।

सहकार 22 में शामिल होंगे

- ❖ फोकस 222- 222 जिलों में सहकारिता के लिए एनसीडीसी सहायता एकत्रित करना
- ❖ पैक्स हब और अन्य कूपों को अपना किसान संसाधन केंद्र के रूप में रूपांतरित करें
- ❖ AENEC- ACT East and North East Coops
- ❖ सीएएमसीटी - कूपों के माध्यम से बाजार के लिए उत्कृष्टता केंद्र
- ❖ सहकार प्रज्ञा: लक्ष्मणराव इनामदार राष्ट्रीय सहकारिता अकादमी
- ❖ सहकार 22 . के लिए क्षमता विकास आधार के रूप में अनुसंधान एवं विकास



एनसीडीसी से वित्तीय सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया

स्वीकृति/सहायता के वितरण की प्रक्रिया

एनसीडीसी सहायता व्यक्तिगत लाभार्थी उन्मुख नहीं है बल्कि सहकारी समितियों के संस्थागत विकास के लिए है। एनसीडीसी राज्य सरकार के प्रयासों का पूरक है। राज्य सरकारें निर्धारित योजनाबद्ध प्रारूप में एनसीडीसी को व्यक्तिगत सोसायटी/परियोजना के प्रस्ताव की सिफारिश करती हैं। निर्धारित शर्तों को पूरा करने पर सहायता की विभिन्न योजनाओं के तहत परियोजनाओं के प्रत्यक्ष वित्त पोषण का भी लाभ उठाएं। प्रस्तावों की संबंधित कार्यात्मक प्रभाग में जांच की जाती है और यदि आवश्यक हो तो मौके पर क्षेत्र मूल्यांकन किया जाता है। इसके बाद, राज्य सरकार को धन की औपचारिक मंजूरी से अवगत कराया जाता है। / समाज। धनराशि जारी करना कार्यान्वयन की प्रगति पर निर्भर करता है और प्रतिपूर्ति के आधार पर होता है। ऋण चुकौती की अवधि 3 से 8 वर्ष तक होती है। ब्याज की दर समय-समय पर बदलती रहती है।

सामान्य आवेदन पत्र

आवेदन पत्र एनसीडीसी की वेबसाइट <http://claf.ncdc.in/claf/> पर उपलब्ध है।

उत्पादक संगठनों (पीओ), किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को सहकारिता के दायरे में लाना

हाल के दिनों में किसानों, दूध उत्पादकों, मछुआरों, बुनकरों, ग्रामीण कारीगरों, शिल्पकारों और ग्रामीण क्षेत्रों में आम जनता जैसे प्राथमिक उत्पादकों द्वारा उनके उत्पादन में सुधार और आय सृजन गतिविधियों को शुरू करने के लिए ऋण तक पहुंच के लिए विभिन्न प्रकार के सामूहिक आयोजन किए गए हैं। ये मोटे तौर पर सहकारी सिद्धांतों पर पंजीकृत सहकारी समितियों के समानांतर काम कर रहे हैं।

पीओ किसी भी उत्पाद के उत्पादकों के संगठन के लिए एक सामान्य नाम है, चाहे वह कृषि हो। जबकि अगर सदस्य किसान हैं तो इसे एफपीओ कहा जाता है। ये मूल रूप से पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं का लाभ प्रदान करने और बेहतर रिटर्न प्रदान करने और सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाने के लिए बिचौलियों की लंबी श्रृंखला को काटने के लिए गठित किए गए हैं। पीओ भारतीय कंपनी अधिनियम के तहत पंजीकृत हैं।

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) सामूहिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए लोगों के स्वैच्छिक संघ हैं। जो लोग सामाजिक पृष्ठभूमि, विरासत, जाति या पारंपरिक व्यवसायों के संबंध में समरूप हैं, वे समूह के सदस्यों के लाभ के लिए संसाधनों को जुटाने और प्रबंधित करने के लिए एक सामान्य कारण के लिए एक साथ आते हैं। एसएचजी की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं: -

- स्वैच्छिक और छोटे संगठन, ज्यादातर सदस्य, जाति/व्यवसाय/खेत के आकार/लिंग या आय के मामले में समरूप
- अन्य सामाजिक उद्देश्यों के साथ-साथ अक्सर एक आर्थिक उद्देश्य रखता है।
- सदस्यों को समान दर्जा प्राप्त है और लोकतांत्रिक तरीके से अपने नेतृत्व का चुनाव करते हैं।
- कार्य करना चरित्र में सहभागी है।



- पहले बचत की मूल अवधारणा पर काम करें और बाद में क्रेडिट करें
- ये तदर्थ संघ नहीं हैं, लेकिन इनके नियम और विनियम, उप-नियम या संविधान हैं जो लिखित रूप में हो सकते हैं।
- कुछ एसएचजी औपचारिक, पंजीकृत संगठन हैं जबकि अन्य अपंजीकृत और अनौपचारिक संगठन हैं।

एसएचजी बड़े पैमाने पर बचत और क्रेडिट समूह के रूप में कार्य कर रहे हैं, जो आर्थिक गतिविधियों को शुरू करने के लिए सदस्यों को ऋण की स्थानीय और आसान पहुंच सुनिश्चित करते हैं। एसएचजी शुरू में अपने दम पर काम करते हैं लेकिन बाद में सदस्यों द्वारा एसएचजी-बैंक लिंकेज प्रोग्राम के तहत पैक्स/डीसीसीबी, आरआरबी या वाणिज्यिक बैंकों के साथ काम करते हैं।

हालांकि, पीओ, एफपीओ और एसएचजी को विभिन्न बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जब उन्हें विपणन और मूल्यवर्धन गतिविधियों में संलग्न होकर किसानों को बेहतर रिटर्न प्रदान करने के लिए अपनी पहुंच और व्यवसाय की मात्रा बढ़ानी होती है। एक आजमाया हुआ मॉडल होने के कारण सहकारी समितियों को सरकारों द्वारा अत्यधिक संरक्षण दिया जाता है। सहकारी विकास के लिए केंद्र और राज्य सरकारों की ओर से विभिन्न प्रकार की योजनाएं और कार्यक्रम उपलब्ध हैं। सहकारी समितियों को मार्गदर्शन, निगरानी, पर्यवेक्षण और सलाह देने के लिए मशीनरी मौजूद है और आसानी से सुलभ है। पीओ, एफपीओ और एसएचजी के पास फंड तक सीमित पहुंच है जबकि सहकारी समितियां डीसीसीबी जैसे आरएफआई और एनसीडीसी जैसे अन्य संस्थानों से आसानी से फंड जुटा सकती हैं। एसएचजी पंजीकृत नहीं हो सकते हैं और उनकी कानूनी स्थिति नहीं है इसलिए धन जुटाना अभी भी मुश्किल है। एसएचजी वर्तमान में केवल छोटे क्रेडिट समूहों के रूप में काम कर रहे हैं और अपने सदस्यों को बेहतर सेवा देने के लिए सहकारी समितियों की तरह कानूनी स्थिति रखने और उद्यम बनने की आवश्यकता है। सरकार। / स्वयं सहायता समूहों में केवल कुछ चुने हुए सदस्यों के लिए एनजीओ सहायता भी उपलब्ध है। कई एसएचजी बाहरी हस्तक्षेप के कारण भी विफल हो जाते हैं, ज्यादातर राजनीतिक और कम व्यावसायिकता के कारण। यह भी देखा गया है कि जब स्वयं सहायता समूह बड़े हो जाते हैं, तो कभी-कभी असहनीय हो जाते हैं। बड़ी संख्या में स्वयं सहायता समूह क्रेडिट समूह के रूप में संतृप्त हो गए हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी आजीविका के लिए अंत तक समाधान प्रदान करने के लिए बचत और ऋण सेवाओं से परे देखने की जरूरत है। विभिन्न प्रकार के समूहों को सही प्रकार के व्यवसाय को अपनाकर, कौशल में सुधार, विपणन लिंकेज आदि प्रदान करके विस्तार करने की तत्काल आवश्यकता है, जिसे प्रभावी ढंग से और कुशलता से किया जाएगा यदि ये निहित लाभों को देखते हुए खुद को सहकारी समितियों के रूप में पंजीकृत करते हैं और सरकारों से उपलब्ध संरक्षण। पंजीकृत सहकारी समितियों के रूप में, एनसीडीसी जैसी संस्था से व्यावसायिक मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और प्रचार लाभ के अलावा, सभी प्रकार के समूह व्यवसाय को बढ़ावा देने और बुनियादी ढांचे और सुविधाओं के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता (सब्सिडी सहित) प्राप्त कर सकते हैं।



अध्याय 5 - 10,000 एफपीओ के गठन और संवर्धन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना

- छोटे और सीमांत किसानों को मौजूदा संसाधनों का अधिकतम अवसर और कृषि क्षेत्र में उपलब्ध नवीनतम तकनीक का लाभ उठाने में सक्षम बनाने के लिए कृषि क्षेत्र में सुधार के उद्देश्य से, भारत सरकार ने जुलाई, 2020 में 10,000 एफपीओ के गठन और संवर्धन के लिए एक योजना शुरू की।
- एफपीओ को कंपनी अधिनियम के साथ-साथ मौजूदा सहकारी अधिनियमों के तहत पंजीकृत किया जाएगा
- एनसीडीसी एसएफएसी, नाबार्ड और डीएसी एंड एफडब्ल्यू द्वारा अनुमोदित अन्य एजेंसियों के साथ-साथ कार्यान्वयन एजेंसियों में से एक है।

योजना के उद्देश्य

- समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास और कृषि समुदायों की भलाई के लिए समग्र और व्यापक आधारित सहायक पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करना
- सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से अपनी उपज की उत्पादकता बढ़ाने और टिकाऊ बनने के लिए नए एफपीओ को सहयोग और समर्थन प्रदान करना
- कृषि-उद्यमिता कौशल विकसित करने के लिए एफपीओ को प्रभावी क्षमता निर्माण प्रदान करना

एफपीओ क्या हैं?

- एक एफपीओ किसानों के एक समूह द्वारा गठित एक पंजीकृत निकाय है जो संगठन में शेयरधारक भी हैं
- यह एफपीओ के सदस्यों के लाभ के लिए सभी प्रकार की कृषि गतिविधियों जैसे कृषि आदानों, प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन, बाजार लिंकेज, क्रेडिट लिंकेज, प्रौद्योगिकी के उपयोग आदि से संबंधित है।

एफपीओ का पंजीकरण

- कंपनी अधिनियम के तहत
- राज्य के सहकारी समिति अधिनियम के तहत (पारस्परिक सहायता प्राप्त या आत्मनिर्भर सहकारी समिति अधिनियम, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाए)
- एफपीओ सहकारी समितियों के उप-नियमों में उपयुक्त प्रावधान सुनिश्चित किया जाना चाहिए

एफपीओ द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं

- उचित दरों पर गुणवत्तापूर्ण उत्पादन इनपुट की आपूर्ति करें
- आवश्यकता आधारित उत्पादन और पोस्ट-प्रोडक्शन मशीनरी और उपकरण उपलब्ध कराएं
- उचित सस्ती दरों पर मूल्यवर्धन की सुविधा
- भंडारण और परिवहन सुविधाओं की सुविधा



एफपीओ द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं

- बीज उत्पादन, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती, आदि जैसी उच्च आय पैदा करने वाली गतिविधियों को अंजाम देना
- किसान-सदस्यों की उपज के छोटे-छोटे ढेरों का एकत्रीकरण करना
- उपज के बारे में बाजार की जानकारी को सुगम बनाना और कृषि विपणन में हाथ पकड़ना सुनिश्चित करना

कार्यान्वयन एजेंसियां

a) राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (रा.स.वि.नि.)

b) राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबाई)

c) छोटे किसान कृषि व्यवसाय संघ (एसएफएसी)

डी) डीएसी एंड एफडब्ल्यू द्वारा अनुमोदित अन्य संस्थान/संगठन

कार्यान्वयन एजेंसियां क्लस्टर आधारित व्यावसायिक संगठनों (सीबीबीओ) की मदद से एफपीओ का गठन और प्रचार करेंगी।

समन्वय और निगरानी एजेंसियां

1.राष्ट्रीय परियोजना प्रबंधन सलाहकार और निधि स्वीकृति समिति (एन-पीएमएफएससी)

- सुचारु कार्यान्वयन के लिए सभी कार्यान्वयन एजेंसियों, राज्य स्तरीय सलाहकार समिति और जिला स्तरीय निगरानी समिति (डी-एमसी) के साथ समन्वय करना
- एफपीओ के गठन और संवर्धन के लिए कार्यान्वयन एजेंसियों को उत्पाद समूहों/जिलों/राज्यों का आवंटन
- सचिव, डीएसी और एफडब्ल्यू की अध्यक्षता में

समन्वय और निगरानी एजेंसियां

राष्ट्रीय परियोजना प्रबंधन एजेंसी (एनपीएमए)

□ एसएफएसी द्वारा स्थापित

- एकीकृत पोर्टल और सूचना प्रबंधन और निगरानी के माध्यम से समग्र परियोजना मार्गदर्शन, डेटा रखरखाव प्रदान करने के लिए
- विभिन्न हितधारकों के साथ बातचीत और समन्वय
- राष्ट्रीय परियोजना प्रबंधन सलाहकार और निधि स्वीकृति समिति की सहायता शाखा

समन्वय और निगरानी एजेंसियां

राज्य स्तरीय सलाहकार समितियां (एसएलसीसी)

- राज्य स्तर पर योजना के कार्यान्वयन और निगरानी के लिए विभिन्न हितधारकों के प्रयासों में तालमेल बिठाना
- नियमित बैठकें आयोजित करना और एफपीओ गठन की समीक्षा और प्रगति की निगरानी करना
- योजना के कार्यान्वयन के दौरान बाधाओं की पहचान करना और डीएसी एंड एफडब्ल्यू से संवाद करना
- राज्य के कृषि या कृषि विपणन विभाग के प्रभारी अपर मुख्य सचिव/सचिव की अध्यक्षता में



➤ समन्वय और निगरानी एजेंसियां

जिला स्तरीय निगरानी समिति (डी-एमसी)

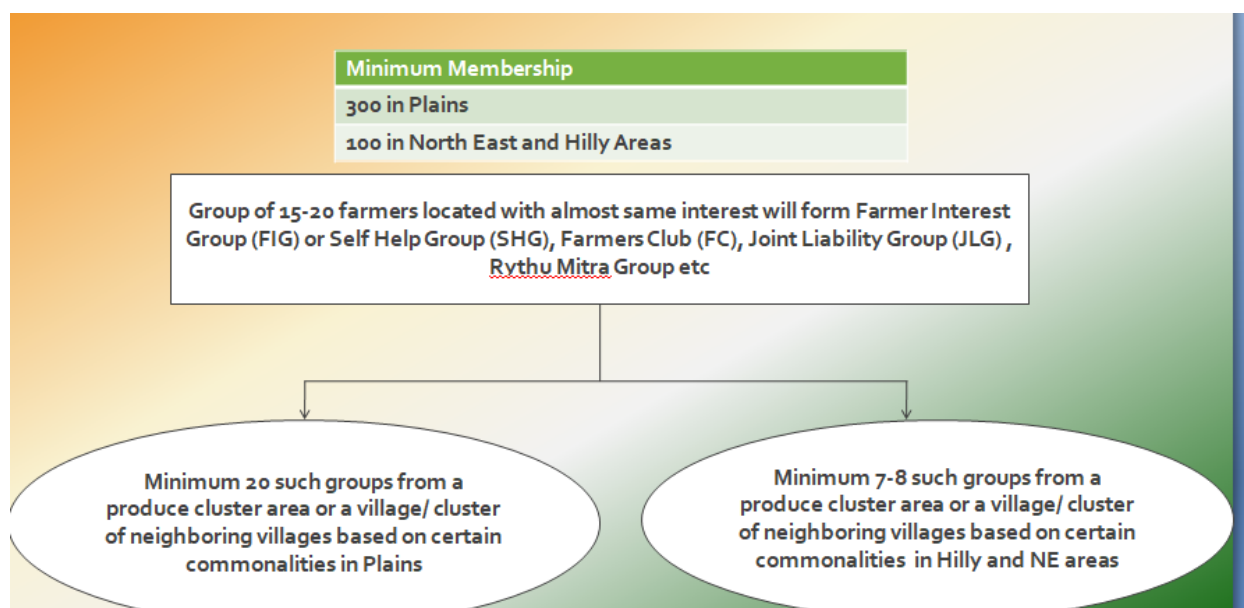
- जिला स्तर पर योजना के कार्यान्वयन के समग्र समन्वय, निगरानी और समीक्षा के लिए
- जिले में संभावित उत्पादन समूहों का सुझाव देना
- जिला स्तरीय बैंकर्स समिति के माध्यम से एफपीओ की वित्तीय और अन्य बाधाओं की पहचान करना और उनका समाधान करना
- जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में

एफपीओ के गठन की रणनीति

- उत्पादन क्लस्टर क्षेत्र के आधार पर एफपीओ का गठन किया जाना है
- उत्पादन क्लस्टर क्षेत्र को कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा पहचाना जाना है
- उपज समूहों की पहचान के लिए "एक जिला एक उत्पाद" दृष्टिकोण लागू किया जाएगा
- डी-एमसी विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों के बीच ब्लॉकों के दोहराव की जांच करेगा और आवश्यक समायोजन करेगा

सीबीबीओ व्यवहार्यता अध्ययन करेंगे, जिसमें आधारभूत सर्वेक्षण शामिल होगा

- कृषि की वर्तमान स्थिति, छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों को एकत्रीकरण उद्देश्य के लिए पहचानना
- न्यूनतम भौगोलिक क्षेत्र की पहचान करने के लिए
- उपज समूहों की पहचान या पुष्टि करने के लिए



एफपीओ गठन के मुख्य केंद्र

इन पर दिया जाएगा विशेष ध्यान:

- छोटे, सीमांत और महिला किसान/महिला स्वयं सहायता समूह सदस्य के रूप में



- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के किसान और अन्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग सदस्य के रूप में।
- उत्पाद विशेषज्ञता के विकास के लिए "एक जिला एक उत्पाद" दृष्टिकोण
- आकांक्षी जिलों में एफपीओ का गठन
- जनजातीय समुदाय और लघु वनोपज का संवर्धन

कार्यान्वयन एजेंसियों का कर्तव्य और उत्तरदायित्व

- सीबीबीओ का चयन और पैनल
- सीबीबीओ की निगरानी करना
- एमआईएस से संबंधित कार्यों के लिए एकीकृत पोर्टल का निर्माण
- एफपीओ के लिए रेटिंग टूल तैयार करना
- वार्षिक कार्य योजना तैयार करें और DAC&FW को प्रस्तुत करें
- मूल्य-श्रृंखला संगठन के साथ समन्वय

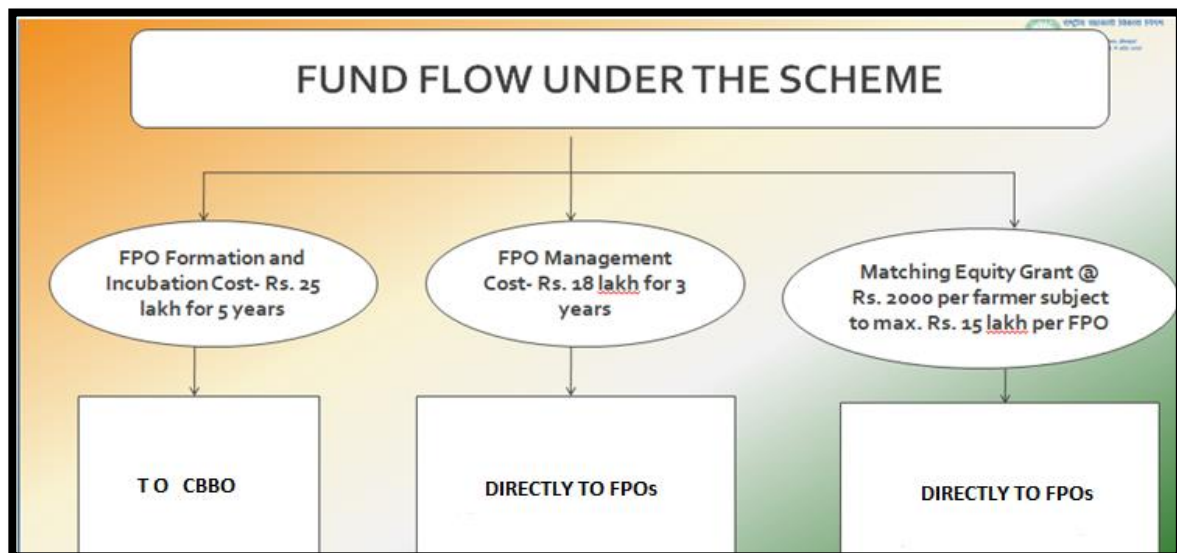
सीबीबीओ

सीबीबीओ क्लस्टर आधारित व्यावसायिक संगठन या संस्थान हैं जो एफपीओ के गठन, पोषण और प्रचार के लिए काम करेंगे और

- क्लस्टर पहचान, सामुदायिक संघटन और आधारभूत सर्वेक्षण के लिए कार्यान्वयन एजेंसियों की सहायता करना
- एफपीओ के लिए व्यवसाय योजना तैयार करने में सहायता करना
- इक्विटी अनुदान प्राप्त करने, हितधारकों के साथ नियमित इंटरफेस स्थापित करने और एफपीओ की प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करने में एफपीओ की सहायता करना

सीबीबीओ की पहचान के लिए मानदंड

- एक कानूनी इकाई होनी चाहिए, जो पिछले 3 वर्षों से मौजूद हो, टर्नओवर रुपये से अधिक हो। मैदानी क्षेत्रों में 2 करोड़ रुपये और रुपये से अधिक। NE और हिमालयी क्षेत्रों में 1 करोड़
- फसल पालन, कृषि विपणन/मूल्य संवर्धन/प्रसंस्करण, सामाजिक संघटन, आईटी/एमआईएस और कानून/लेखा के क्षेत्र में पेशेवरों को नियुक्त करने के लिए या इच्छुक होना चाहिए



योजना के तहत निधि प्रवाह

एफपीओ गठन और ऊष्मायन लागत

शामिल हैं:-

- ✓ आधारभूत सर्वेक्षण करने की लागत,
- ✓ किसानों की लामबंदी
- ✓ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना
- ✓ एक्सपोजर विज़िट आयोजित करना
- ✓ पेशेवर हाथ पकड़े
- ✓ ऊष्मायन, सीबीबीओ को शामिल करने की लागत
- ✓ अन्य उपरिव्य

एफपीओ प्रबंधन लागत

रु. 3 साल के लिए 18 लाख या एफपीओ को भुगतान की गई वास्तविक लागत

शीर्ष	लागत
सीईओ/प्रबंधक का वेतन	अधिकतम रु.25000/- प्रति माह तक
लेखाकार का वेतन	अधिकतम रु. 10000/- प्रति माह तक
एकमुश्त पंजीकरण लागत-	अधिकतम रु. 40000/-
कार्यालय किराया	अधिकतम - रु. 48,000/- प्रति वर्ष



उपयोगिता शुल्क	बिजली और टेलीफोन शुल्क रुपये 12000/- प्रति वर्ष
मामूली उपकरणों के लिए एकमुश्त लागत	फर्नीचर और फिक्स्चर सहित अधिकतम रु. 1,00,000/-
यात्रा और बैठक की लागत	अधिकतम रु.18,000/- प्रति वर्ष
विविध	सफाई, स्टेशनरी आदि पर अधिकतम रु. 12,000/- प्रति वर्ष

एफपीओ के पदाधिकारियों की न्यूनतम योग्यता

- सीईओ/प्रबंधक कृषि/कृषि विपणन/कृषि-व्यवसाय प्रबंधन में स्नातक या बीबीए या समकक्ष होना चाहिए
- लेखाकार के पास अनिवार्य विषय के रूप में गणित के साथ या वैकल्पिक रूप से वाणिज्य या लेखा पृष्ठभूमि के साथ 10+2 की शैक्षिक योग्यता होनी चाहिए।
- एफपीओ के सदस्यों पर भी विचार किया जा सकता है यदि वे उपरोक्त मानदंडों को पूरा करते हैं

इक्विटी अनुदान

- एफपीओ के प्रति निर्माता सदस्य को 2000/- रुपये तक का मिलान अनुदान, अधिकतम रु. 15.00 लाख प्रति एफपीओ

विवरण	किसान इक्विटी (अधिकतम)	प्रदान किया गया मिलान अनुदान (अधिकतम)
निर्माता सदस्य	रु. 2000 (कथित)	रु. 2000
यदि एफपीओ में 750 सदस्य हैं, तो	रु.. 15,00,000	रु. 15,00,000

इक्विटी अनुदान के उद्देश्य हैं: -

- एफपीओ की व्यवहार्यता और स्थिरता में वृद्धि
- एफपीओ की क्रेडिट योग्यता बढ़ाएं
- सदस्यों का स्वामित्व बढ़ाने और उनके एफपीओ में भागीदारी बढ़ाने के लिए उनकी हिस्सेदारी बढ़ाना



इक्विटी अनुदान के लिए पात्रता

- एफपीओ सहकारी को एक कानूनी इकाई, यानी पंजीकृत होना चाहिए
- इसने अपने संघ के अंतर्नियमों/उपनियमों में निर्धारित के अनुसार अपने सदस्यों से इक्विटी जुटाई है
- इसके न्यूनतम 50% शेयरधारक छोटे, सीमांत और भूमिहीन काश्तकार किसान हैं
- किसी एक सदस्य द्वारा अधिकतम शेयरधारिता एफपीओ की कुल इक्विटी के 10% से अधिक नहीं होनी चाहिए
- निदेशक मंडल (बीओडी) और एफपीओ के शासी निकाय में महिला किसान सदस्य (सदस्यों) का पर्याप्त प्रतिनिधित्व
- इसके पास अगले 18 महीनों के लिए एक व्यवसाय योजना और बजट है जो एक स्थायी, राजस्व मॉडल पर आधारित है

इक्विटी अनुदान

आवेदन अनुदान आवेदनों में निरपवाद रूप से शामिल होंगे:-

- सीए / सहकारी लेखा परीक्षकों द्वारा विधिवत प्रमाणित शेयरधारकों की सूची और शेयर पूंजी योगदान
- इक्विटी अनुदान प्राप्त करने के लिए निदेशक मंडल/शासी निकाय का संकल्प
- शेयरधारकों की सहमति
- मौजूदा एफपीओ के मामले में सभी वर्षों के लेखा परीक्षित वित्तीय विवरण/नए एफपीओ के लिए छह महीने का बैंक खाता विवरण (अस्तित्व के 1 वर्ष के भीतर)
- अगले 18 महीनों के लिए व्यवसाय योजना और बजट

इक्विटी अनुदान के लिए उचित परिश्रम

कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा उचित परिश्रम में शामिल होंगे: -

- शासन पहलू
- व्यापार और व्यवसाय योजना व्यवहार्यता
- प्रबंधन क्षमता पहलू
- वित्तीय पहलू

सभी दस्तावेजों और सूचनाओं को सीबीबीओ द्वारा सत्यापित किया जाएगा और कार्यान्वयन एजेंसी को भेजा जाएगा

इक्विटी अनुदान

- एफपीओ, इक्विटी अनुदान प्राप्त होने के 45 दिनों के भीतर, अपने शेयरधारकों को पात्र अतिरिक्त शेयर जारी करेगा
- एफपीओ अधिकतम 3 किशतों (4 वर्षों के भीतर) में इक्विटी अनुदान प्राप्त कर सकते हैं
- दूसरी किशत के लिए अनुरोध को नए आवेदन के रूप में माना जाना चाहिए और कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा लागू किए जाने वाले समान परिश्रम को लागू किया जाना चाहिए

इक्विटी अनुदान



इक्विटी अनुदान वापस लिया जा सकता है

- सदस्यों को 45 दिनों के भीतर अतिरिक्त शेयर जारी करने में विफलता के मामले में
- इक्विटी अनुदान की प्राप्ति के 5 वर्षों के भीतर एफपीओ को बंद करना/विघटित करना

इक्विटी अनुदान के दुरुपयोग/दुरुपयोग का उदाहरण

इक्विटी अनुदान के लिए प्रपत्र और अनुबंध

- एफपीओ द्वारा इक्विटी अनुदान प्राप्त करने के लिए आवेदन पत्र (अनुलग्नक-I)
- शेयरधारकों की सूची का प्रारूप (अनुलग्नक-II)
- सभी शेयरधारकों के निदेशक मंडल का संकल्प और सहमति प्रपत्र (अनुलग्नक-III)

क्रेडिट गारंटी सुविधा

- मुख्यधारा के बैंकों और वित्तीय संस्थानों से एफपीओ की क्रेडिट तक पहुंच सुनिश्चित करना
- रुपये का एक समर्पित क्रेडिट गारंटी फंड। योजना में 1500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है
- यह एफपीओ को ऋण देने के लिए वित्तीय संस्थानों के जोखिम को कम करके एफपीओ को संस्थागत ऋण के प्रवाह में तेजी लाने के लिए उपयुक्त क्रेडिट गारंटी कवर प्रदान करेगा।
- इससे बेहतर व्यावसायिक योजनाओं को क्रियान्वित करने की उनकी वित्तीय क्षमता में सुधार होगा जिससे लाभ में वृद्धि होगी

क्रेडिट गारंटी सुविधाएं

- परियोजना ऋण के मामले में रु. 1 करोड़ रुपये की सीमा के साथ क्रेडिट गारंटी कवर बैंक योग्य परियोजना ऋण का 85% होगा। 85 लाख
- 1 करोड़ रुपये से अधिक और रुपये तक के परियोजना ऋण के मामले में। 2 करोड़ रुपये की अधिकतम सीमा के साथ क्रेडिट गारंटी कवर बैंक योग्य परियोजना ऋण का 75% होगा। 150 लाख
- हालांकि, रुपये से अधिक परियोजना ऋण के लिए। बैंक योग्य परियोजना ऋण के 2 करोड़, क्रेडिट गारंटी कवर रुपये तक सीमित होगा। केवल 2.0 करोड़

क्रेडिट गारंटी सुविधाएं

- एकल एफपीओ उधारकर्ता के संबंध में 5 वर्षों की अवधि में अधिकतम 2 बार ऋण सुविधा उपलब्ध है
- डिफॉल्ट सेटलमेंट के मामले में राशि का 85% या 75% तक डिफॉल्ट में, जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया गया है, अधिकतम कवर के अधीन
- सीजीएफ कवर प्राप्त करने के लिए आवेदन पत्र (अनुलग्नक-IV)

पात्र ऋण संस्थाएं-एलआईएस

- भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की दूसरी अनुसूची में फिलहाल शामिल अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक,
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक,
- सहकारी बैंक,
- सहकारी ऋण समिति,



- एनसीडीसी आदि जैसे विकास निधि संस्थान
- एक ईएलआई एफपीओ / एफपीओ के संघ के लिए क्रेडिट गारंटी का लाभ उठा सकता है, जो इस योजना के अंतर्गत आते हैं

एफपीओ का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

- ❖ लक्ष्मणराव इनामदार राष्ट्रीय सहकारी अनुसंधान एवं विकास अकादमी (लिनैक), गुरुग्राम और क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र (आरटीसी) को केंद्रीय स्तर पर नोडल प्रशिक्षण संस्थान के रूप में नामित किया गया है।
- ❖ लिनाक अन्य प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संगठनों जैसे नियाम, वेमनिकाम, मैनेज, एनआईआरडी, एनसीसीटी, आईआरएमए, एएससीआई, आदि के साथ भी समन्वय करेगा।
- ❖ लिनाक ने एफपीओ सहकारी समितियों और हितधारकों को प्रशिक्षण देने के लिए 45 प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किए हैं



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

अनुगलनक - I

Application Form for seeking Equity Grant by FPO

Date:

To,

(i) The Managing Director
Small Farmers' Agri-Business Consortium (SFAC),
NCUI Auditorium, August Kranti Marg,
Hauz Khas, New Delhi 110016.

(ii) The Managing Director
National Co-operative Development Corporation (NCDC),
4, Siri Institutional Area,
Hauz Khas, New Delhi 110016.

(iii) The Chief General Manager
National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD),
Regional Office -----

(iv) To any other additional Implementing Agency
allowed/designated, as the case may be.

Sub: Application for Equity Grant under scheme of Formation and Promotion of 10,000
Farmer Producer Organizations (FPOs)

Dear Sir/Madam,

We herewith apply for Equity Grant as per the provisions under the captioned scheme.

1. The details of the FPO are as under-

S. No.	Particulars to be furnished	Details
1.	Name of the FPO	
2.	Correspondence address of FPO	
3.	Contact details of FPO	
4.	Registration Number	
5.	Date of registration/incorporation of FPO	
6.	Brief account of business of FPO	
7.	Number of Shareholder Members	
8.	Number of Small, Marginal and Landless Shareholder Members	



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

9.	Paid up Capital (in INR)	
10.	Amount of Equity Grant sought (in INR)	
11.	Maximum shareholding of an Individual Shareholder Member	
12.	Bank name in which account is maintained	
13.	Account number	
14.	Branch name & IFSC code	
15.	Number of Directors with their briefs	
16.	Mode of Board formation (election/ nomination)	
17.	Number of Women Director(s)	
18.	Date(s) of Board/Governing Body Meetings held in the last year	
19.	Number of functional committees of the FPO: (Mention the major activities of each committee)	1. 2. 3.
20.	Roles & Responsibility of Boards/ Governing Body	1. 2. 3. 4.

2. Details of Board of Directors/Governing Body-

S. No.	Name of the Directors of Board/ Governing Body	Designation/ Role In the FPO	Aadhar Number	DIN Number	Qualifications Tenure (In yrs.)	Contact No./ Address	Land holding (In Acres)
1.							
2.							
3.							
4.							



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

3. Details of Members of Board/ Governing Body

S. No.	Name of the Members of Board/ Governing Body	Role in the FPO	Aadhar Number	Qualifications Tenure (in yrs.), if any	Contact No./ Address	Land holding (in Acres)
1.						

4. Details of Shareholding of FPO Members-

#	Number of shareholders	Number and face value (INR) of shares allotted	Total amount paid (including premium in INR.)

We certify that no member of our FPO had availed Equity Grant facility earlier.

We submit our application along with the mandatory documents and request that the equity grant be approved.

Yours faithfully,

President/Chief Executive Officer/Manager

Authorized Representative/ Director of FPO



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

अनुलग्नक - II

Shareholders' List and Share Capital contribution by each member verified and certified by a Chartered Accountant (CA) prior to submission

S.No	Member Name & Gender	Date of Membership	Share Money deposited by member (Rs.)	No. of Shares allotted (Share Value in INR)	Folio Share distinctive Number	Land holding of Shareholders (in Acres)	Land Record (Khasra No.)

Signature of President

Signature of CEO Name: Name:

Place:

Place:

Date:

Date:

Verified and certified by Chartered Accountant (CA) (Sign and Seal)



अनुलग्नक - III

Resolution of Board of Directors/Governing Body to seek Equity Grant for Members

FPO to seek Equity Grant for Shareholders (Certified true Copy)

a) Place of meeting.....

b) Date of meeting.....

Agenda of Meeting: to avail Equity Grant support

Whereas the FPO has been formed under _____
(legal registration status of FPO) and on the basis of the decision of the
AGM/EGM (held on) _____ (mention the date) to
avail Equity Grant support under the Scheme.

We, the Board of Directors of the FPO unanimously resolve that-

- i. The grant shall be utilized for business enhancement of the FPO.
- ii. The basis of allocation of the said fund shall be the individual share money contribution by members and in accordance with the criteria laid down in the Scheme.
- iii. The accounts of the said grant shall be maintained in a proper manner.
- iv. The benefit of the said support shall be extended shareholder member-wise and shall be available to an individual till she/he is the member of the FPO.
- v. If a shareholder member quits the FPO at any point, the shares issued in lieu of the grant shall be retained by the FPO and shall not be paid to the member but shall be allocated to a new/additional existing member as per the scheme guidelines. This has been discussed in the AGM/EGM held for this purpose on----- and the Shareholders are fully cognizant of the Terms and Conditions of the Scheme & have agreed to abide by the same.

We further resolve that to execute the documents pertaining to this support,
the President / in his absence, any one of the following Directors of the FPO



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

for any reason due to non-availability of the President and the Chief Executive of FPO, whose signatures are given below and certified by the Bank are authorised to sign all documents and forms jointly. Further resolved that this Resolution be communicated to..... (Name of Implementing Agency) and shall remain in force until further notice in writing.

Signed by the CEO & Board of Directors and Sealed

S.No.	Name	Designation	Signatures



Consent Form of all Shareholders

We are Shareholders in _____(Name of the FPO) located in _____ (Name of village/block/district/State). We have purchased _____ (number of issued Shares) worth Rs. _____ (value of the issued Shares) from the FPO, as per the list below-

(List to be attached stating name of shareholder, gender, number of shares held face value of shares, land holding, and signature.)

We have been informed about /read the Terms and Conditions of the EG and agree to the same. In particular, each shareholder hereby agrees that the entire amount of Equity Grant sanctioned by.....(Name of Implementing Agency) on our behalf be directly transferred to our FPO's account towards the consideration of additional shares to be issued to us of equivalent amount in the FPO.

On receipt of the amount, the FPO shall immediately, issue additional shares to respective shareholders, of the equivalent amount sanctioned to each shareholder by the.....(Name of Implementing Agency)

We also agree that should any shareholder at any point cease to be a Member of the FPO for any reason whatsoever, the additional shares against the Equity Grant that stand in his/her name shall be retained by the FPO to be allocated to another Member as specified under the Scheme and that in such a case, he shall not receive the value of the share.

In support of our consent, we have affixed our signatures /thumb impressions below: Consent details:-



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

	Name & Gender of Shareholder	Current Equity holding (Number and Face Value in INR)	Current Landholding (in acres.)	Signatures/ Thumb impressions
1.				
2.				
3.				

We declare that the information furnished by the shareholders above is true.

Chief Executive Officer (Seal)

President/Authorised Signatory

Certified by a Chartered Accountant (CA) (Seal) Countersigned by Bank Manager

(of the Bank where the FPC has the account) (Seal)



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

Annexure - IV

Application Form for Seeking Credit GUARANTEE Cover UNDER CGF

Name of Implementing Agency (NABARD/NCDC):				
Address:				
Phone Number:				
(Each page of the application form should be signed by Branch head and Zonal Manager)				
Name and Address of the applicant Bank Branch :				
1 a)	Complete Postal Address ("with pin-code) :			
1 b)	Phone No. with STD :			
1 c)	Fax No.:			
1 d)	E-Mail Address:			
1 e)	Details of the authorised person of the Bank submitting the Claim:	Designation	Mobile No.	E-Mail Address.
2	Name of Borrower FPO :			
2 a)	Constitution:	Producer Organization		
2 b)	Registered Office Address ("with pin-code):			
	(I). Phone No.	(II). Fax No.	(III). E-mail Address	
2 c)	Business Office Address (if any)			
	(I). Phone No.	(II). Fax No.	(III). E-mail Address	
2 d)	Name of CEO :			
	Mobile No.			
2 e)	Credit Facility for which guarantee cover sought :			
	Old	New	Expansion	Technical Up-gradation
2 f)	Give details of components:-			
	Inputs:		Processing:	
	Marketing:		Any other:	
	Total Investment:			
3	Banking Facilities Sanctioned by sanctioning authority (Rs. in Lakh):-			
	(I). Term-Loan :	Date of Sanction:	Amount Outstanding:	IRAC Status:



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

	(II).Cash Credit :	Date of Sanction:	Amount Outstanding:	IRAC Status:
3 a)	Sanctioning Office:	Branch:	ZO / RO:	HO:
3 b)	Designation of Sanctioning Authority :			
3 c)	Sanctioning authority approval vide :			
3 d)	Sanction / Appraisal Note No.		Dated:	
3 e)	Agenda No. / Minutes conveying sanction :			
4	Name and Address of Controlling Office of the Branch (*with pin-code):			
4.a).	Name of Controlling Authority :			
4.b).	Mobile No.:			
4.c).	Fax. No. :			
4.d).	E-Mail Address. :			
5	Present status of FPO Activity : (Give component wise details)			
5. a)				
5. b).				
5. c).				
5. d).				
5. e).				
5. f)				
6	Status of Accounts			
6. a).	Term-Loan:			
	Amount of Disbursement till date :		Outstanding as on date :	
	I). First Installment due on (date) :			
	II). Last Installment due on (date) :			
6. b).	Cash Credit :			
	Limit:	Drawing Power:	Outstanding:	
	Comments on Irregularity (if any):			
	Any adverse comments on the unit by inspecting official in last inspection report:			
7.	A. Cost of Project (as accepted by sanctioning authority)(In Rs. Lakh)		B. Means of Finance (as accepted by sanctioning authority)(In Rs. Lakh)	
	Give component wise details		a. Term loan of Bank:	
			b. Promoter Equity	



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

			c. Unsecured loan :	
			d. Others if any	
	Total		Total	
8.	A. Forward Linkages:		B. Backward Linkages with Small/Marginal farmers:	
	1		No. of members:	
	2		Details of Primary and Collateral Securities taken by the bank (If any)	
	3		a. Primary Securities	b. Collateral Securities
	4			
	5			
	6			
	(Please enclose details separately)			
9	Name of the Consortium (If any) associated with Credit Facility with complete address, contact details and email:			
9 a)	Address (*with pin-code) :			
9 b)	Contact Details :			
9 c)	Email Address :			
Request of Branch head for Credit Guarantee:-				
In view of the above information, we request Credit Guarantee Cover against Credit Facility of Rs.....(In Rupees) to FPO(copy of sanction letter along with appraisal/process note of competent authority is enclosed for your perusal and record).				
Further we confirm that :				
1. The KYC norms in respect of the Promoters have been complied by us.				
2. Techno-feasibility and economic viability aspect of the project has been taken care of by the sanctioning authority and the branch.				
3. On quarterly basis, bank will apprise the(Name of Implementing Agency)about progress of unit, recovery of bank's dues and present status of account to.....(Name of Implementing Agency)				
4. We undertake to abide by the Terms & Conditions of the Scheme.				



राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

NCDC

Assisting Cooperatives. Always!

सहकारिताओं की सहायता में सदैव तत्पर!

Date.....		Signature of Branch Manager with branch seal Name Designation Signature of Authorized Person in zonal office Name..... Designation
List of Enclosures		
1. Recommendation with amount of CGC sought on Bank's Original letterhead with date and dispatch number duly signed by the Branch Manager on each page.	5. Promoter's request letter addressed to the Bank Manager on original letter head of FPO	9. List of shareholders confirmed by promoter and bank
2. Sanction letter of sanctioning authority addressed to recommending branch.	6. Implementation Schedule confirmed by the bank.	10. Affidavit of promoters that they have not availed CGC from any other institution for sanctioned Credit Facility.
3. Bank's approved Appraisal/Process note bearing signature of sanctioning authority.	7. Up-to-date statement of account of Term loan and Cash Credit (if Sanctioned).	11. Field Inspection report of Bank official as on recent date.
4. Potential Impact on small farmer producers 1. Social Impact, 2. Environmental Impact 3. Risk Analysis	8. a). Equity Certificate, C.A/CS certificate/RCS certificate b). FORM-2, FORM-5 and FORM-23 filed with ROC for Company/ RCS.	* Pin Code at Column No. 1. a), 2. b), 2. c), 4. a) and 9. a) is Mandatory